अंक-30 | वर्ष-2024

राजप्रभा

विभागीय पत्रिका

केंद्रीय वस्तु व सेवा कर एवं सीमा शुल्क, जयपुर

नव केंद्रीय राजस्व भवन, स्टेच्यू सर्किल, जयपुर

स्वतंत्रता दिवस समारोह-2023

राजप्रभा

विभागीय पत्रिका

अंक - 30 | विक्रम संवत्-2080 | वर्ष -2024

संरक्षक
श्री महेंद्र रंगा
मुख्य आयुक्त

प्रधान संपादक
श्री चेतन कुमार जैन
प्रधान आयुक्त

प्रबंध संपादक
श्री ऋषि यादव
अपर आयुक्त

संपादक
श्री राजेश अगरवाला
सहायक आयुक्त

कार्यकारी संपादक दल
श्री अशोक कुमार बिरानियां, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
श्रीमती नीता शुक्ल, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
श्री प्रेम प्रकाश मीना, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

केवल विभागीय प्रयोगार्थ

1. पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
2. पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ मौलिक ही हैं ऐसा सुनिश्चित करना सम्पादक मण्डल के लिए संभव नहीं है।

अनुक्रमणिका

1.	संदेश	3–4
2.	संरक्षक की कलम से	5
3.	प्रधान संपादक की कलम से	6
4.	संदेश	7–14
5.	प्रबंध संपादक की कलम से	15
6.	संपादक की कलम से	16
7.	संवाद/ज्ञान संग्रह–एक अनूठी पहल	17–18
8.	बकवास	19
9.	पुराना फ्रेम	20–23
10.	आज मुझे ये रण बुलाता है	23
11.	हर बार कैसे	24
12.	स्वस्थ जीवन जीना एक कला है	25–27
13.	अहंकार यानि विनाश, मनोरोग और बर्बादी	27
14.	मैं भारत का बेटा हूँ	28–29
15.	खड़ूस	30–31
16.	आओ कुछ देर बात करें हम सारे वतन की	31
17.	राजभाषा समारोह 2023	32–33
18.	राजभाषा पुरस्कार	34–38
19.	विभाग के अनमोल रत्न	39–43
20.	ऐ नौनिहालों	44
21.	अंतरिक्ष की ओर ~~उठते~~ उड़ते भारतीय कदम	45–47
22.	जब बुद्ध लौटे	48–49
23.	यादें	49
24.	हमेशा अपने आपको स्टूडेंट ही समझें और सीखने के लिए तैयार रहें	50
25.	मंजिल	51
26.	उत्साहपूर्ण जीवन	51
27.	वो कुत्ता–ए–आजम	52–53
28.	समय और शिक्षा	53
29.	दिवाली : बचपन वाली	54–55
30.	चमकीला सूरज निकलेगा	55
31.	मेडिकल कैम्प	56
32.	साईकिल रैली	57
33.	तनावमुक्त जीवन	58
34.	योग दिवस	59
35.	जीएसटी दिवस समारोह	60
36.	सतर्कता जागरूकता सप्ताह	61
37.	दीपावली मिलन समारोह	62
38.	वरिष्ट अधिकारियों की बैठक	63
39.	ध्यान योग शिविर	64
40.	स्वच्छता शपथ	65
41.	खेल–कूद	66
42.	आईसीटी मत लेना यारे	67
43.	तमस, रजस और सत्व तीनों गुण जीवन में अनिवार्य हैं....	68–70
44.	हिंदी हूँ मैं	70
45.	मातृ दिवस	71
46.	क्षणिकाएं	72–74
47.	रिटायरमेंट	75
48.	स्वावलंबन	76
49.	इंसान कहीं खो गया है	76
50.	म्हारो मनड़ो करैं पुकार गुराजी संग ले चालो जी	77
51.	चित्रकारी	78–80

सत्यमेव जयते

अध्यक्ष
केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
नई दिल्ली

संदेश

यह बहुत ही प्रसन्नता की बात है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर-जोन, जयपुर द्वारा विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' का प्रकाशन किया जा रहा। केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु कई प्रोत्साहन योजनाएं एवं गतिविधियों का संचालन किया जाता है और इस कड़ी में हिंदी पत्रिकाएँ भी अहम भूमिका निभाती हैं।

विभागीय पत्रिकाएँ न केवल अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को एक मंच प्रदान करती हैं बल्कि राजभाषा नीति के कार्यान्वयन का दायित्व भी पूरा करती हैं। हिंदी पत्रिका प्रकाशन का मुख्य ध्येय पत्रिका में छपी रचनाओं के माध्यम से हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना एवं इसके प्रयोग के प्रति जागरूकता का विकास करना है।

यह अत्यंत खुशी की बात है कि आज न केवल कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग में वृद्धि हुई है बल्कि सार्वजनिक जीवन में अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी हिंदी का प्रभुत्त्व बढ़ा है।

मैं पत्रिका के प्रकाशन के लिए इससे जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इसकी सफलता की कामना करता हूँ।

(संजय कुमार अग्रवाल)

सत्यमेव जयते

सदस्य (कर नीति)
केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
नई दिल्ली

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर-जोन, जयपुर द्वारा विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' के आगामी अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी नवीन शब्द रचना की दृष्टि से विलक्षण है एवं अन्य भाषाओं एवं बोलियों आदि के शब्द लेने में भी संकोच नहीं करती है। हिंदी के इसी गुण के कारण इसका साहित्य बहुत समृद्धशाली है। हिंदी साहित्य की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसकी प्रमुख रचनाओं का अधिकतर भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए आशा करता हूँ कि पत्रिका का यह अंक भी अपने पूर्व के अंकों की भाँति ही ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक होगा।

(शशांक प्रिय)

सत्यमेव जयते

मुख्य आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर जोन
जयपुर

संरक्षक की कलम से

जयपुर जोन में 'राजप्रभा' पत्रिका के माध्यम से संवाद करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम होती है। यदि यह अभिव्यक्ति अपनी भाषा में की जाए तो वह प्रवाहमयी और प्रभावशाली हो जाती है। किसी भी देश की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखने में भाषा का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। इसके द्वारा देशवासियों के मनोमस्तिष्क में सहकारिता की भावना का उदय होता है।

हिंदी को भारत की राजभाषा के साथ-साथ वर्षों से भारत के जनमानस की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा होने का गौरव प्राप्त है। स्वतंत्रता के पश्चात देश में हिंदी के क्षेत्र और दायरे में वृद्धि हुई है। देश और दुनिया में हिंदी के प्रयोक्ताओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। जोन के आयुक्तालयों को राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु विभिन्न स्तरों पर पुरस्कार प्राप्त होते रहते हैं। इसके लिए यहां के अधिकारी एवं कर्मचारी बधाई के पात्र हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि जोन के अधिकारी हिंदी भाषा में अधिक से अधिक कार्य करेंगे। इससे उनकी प्रतिभा का पूर्ण उपयोग व विकास हो सकेगा। परिणामस्वरूप यह जोन हर क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित कर सकेगा। पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(महेंद्र रंगा)

सत्यमेव जयते

प्रधान आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर

प्रधान संपादक की कलम से

यह मेरे लिए गौरव का क्षण है जब मुझे हमारे परिक्षेत्र कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' के इस अंक के प्रधान संपादक का कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। हिंदी केवल भाषा ही नहीं है बल्कि भारतीय संस्कृति की सशक्त एवं समर्थ संवाहिका भी है।

आज सूचना और तकनीकी के आधुनिक युग में विश्व की अन्य भाषाओं की तरह हिंदी भाषा भी अपना रूप-स्वरूप बदलकर विभिन्न भाषाओं के शब्दों को ग्रहण कर अपने-आप को समृद्ध कर रही है। अब हिंदी के सहज एवं सरल प्रयोग से कार्यालयों में भी हिंदी का प्रयोग दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। इससे राष्ट्रीय पहचान और एकता को भी बढ़ावा मिल रहा है।

साथियों, 'राजप्रभा' का प्रयास है-कार्यालय में हिंदी भाषा का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करना और हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना। आशा है कि कार्यालयों की गतिविधियों और साहित्यिक गतिविधियों से परिपूर्ण यह अंक आपको पसंद आएगा। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं लेखकों को हार्दिक धन्यवाद।

चेतन जैन

(चेतन कुमार जैन)

सत्यमेव जयते

आयुक्त,
सीमा शुल्क (निवारक), जोधपुर
मुख्यालय जयपुर

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि राजस्थान जोन में स्थित सभी आयुक्तालयों द्वारा संयुक्त रूप से विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' के आगामी अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिंदी भाषा की सरल शैली इसे हमारी अभिव्यक्ति सम्प्रेषण का भी एक अहम स्रोत बनाती है। इस उद्देश्य के साथ ही राजभाषा पत्रिका 'राजप्रभा' विभाग में कार्यरत अधिकारियों एवं उनके परिवार के सदस्यगणों को अपनी साहित्यिक अभिरूचि को साकार करने के लिए एक मंच प्रदान करती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि विविधता में एकता को दर्शाने वाली यह पत्रिका अपने बहुआयामी दायित्व में पूर्णरूपेण सफल होगी।

पत्रिका की सफलतार्थ मेरी शुभकामनाएं।

(सुग्रीव मीना)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जोधपुर

संदेश

यह बहुत ही खुशी का विषय है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर जयपुर-जोन, जयपुर की विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' के एक और अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

इस पत्रिका की प्रगति एवं निरंतर विकास की कामना करते हुए मैं यह आशा रखता हूँ कि हम सब हिंदी के प्रयोग का प्रचार-प्रसार करने के लिए तत्पर रहेंगे तथा सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का ही प्रयोग करेंगे और वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी एवं इंटरनेट के युग में कम्प्यूटर पर भी सहजता से हिंदी में कार्य किया जा सकता है।

पत्रिका के प्रकाशन हेतु सारे सहयोगियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(राजीव अग्रवाल)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अपील, जोधपुर

संदेश

यह बहुत ही खुशी की बात है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर एवं उत्पाद शुल्क, जयपुर-जोन, जयपुर द्वारा विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' के 30वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे आशा एवं पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा के उत्तरोत्तर विकास एवं सभी वर्ग के अधिकारियों के विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर देते हुए प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहेगी।

केंद्र सरकार के सभी विभागों में भिन्न-भिन्न प्रान्तों के विभिन्न भाषा-भाषी अधिकारीगण कार्य करते हैं और उनके भावों के आदान-प्रदान के लिए एक सामान्य सूत्र भाषा की आवश्यकता होती है जो हिंदी भाषा बखूबी कर रही है।

मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए इसके प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी कार्मिकों को हार्दिक बधाई देता हूं।

(अजय कुमार)

सत्यमेव जयते

आयुक्त,
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अपील, जयपुर

संदेश

विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' से जुड़ने का मुझे जो सुखद अवसर मिला है उससे मुझे हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। हिंदी भाषा न केवल राष्ट्रीय एकता को सम्पोषित करती है बल्कि यह विचारों के आदान-प्रदान का भी एक सशक्त माध्यम है।

भारत में विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों एवं विभिन्न भाषा बोलने वाले लोग भी निवास करते हैं। अनेक विविधताओं के होते हुए भी अनेकता में एकता हमारी प्रमुख विशेषता है। राजभाषा हिंदी के माध्यम से हम भारतवर्ष के लोग एक सूत्र में बँधे हुए हैं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(रामजीलाल मीना)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, उदयपुर

संदेश

केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर तथा सीमा शुल्क, जयपुर की विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' के प्रकाशन से जुड़कर मुझे हार्दिक हर्ष की अनुभूति हो रही है।

हिंदी को राजभाषा के रूप में इसलिए अनुमोदित किया गया है क्योंकि हिंदी को जानने, समझने व बोलने वाले देश के कोने-कोने में विद्यमान हैं। हिंदी में कार्य करना सहज व सरल है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में विभागीय पत्रिका 'राजप्रभा' का निरंतर प्रकाशन एक महत्त्वपूर्ण योगदान है।

राजभाषा पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(डी.एस. मीना)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण, जोधपुर

संदेश

केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर तथा सीमा शुल्क, जयपुर द्वारा राजभाषा की गृह पत्रिका 'राजप्रभा' के प्रकाशन से जुड़कर मुझे बहुत खुशी हो रही है। आयुक्तालय में राजभाषा के प्रति अनुकूल वातावरण बनाने की दिशा में राजभाषा पत्रिका एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए राजभाषा पत्रिका 'राजप्रभा' का निरंतर प्रकाशन आयुक्तालय द्वारा किया जा रहा है और यह बहुत गौरव की बात है।

हिंदी भाषा अत्यन्त सहज एवं सरल भाषा है। यदि हम बोलचाल के साथ ही लिखने में भी हिंदी का प्रयोग अपने दैनिक व्यवहार में लाएं तो हम सम्पूर्ण कार्यालयीन कार्य हिंदी में कर सकने में सक्षम हैं।

पत्रिका की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(राजीव रंजन)

सत्यमेव जयते

आयुक्त,
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, अलवर

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर-जोन, जयपुर द्वारा विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' के 30वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

विभागीय हिन्दी पत्रिकाओं के प्रकाशन द्वारा हिन्दी में कार्य करने का प्राकृतिक वातावरण तैयार होता है और 'राजप्रभा' भी अपने इसी दायित्वों को निभाते हुए अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति रूझान एवं उत्साह बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही है।

हिन्दी बहुत ही सहज एवं सरल भाषा है तथा मेरा मानना है कि दैनिक व्यवहार में हिन्दी को अपनाने एवं अपने काम-काज का हिस्सा बनाने पर हिन्दी भाषा का उत्तरोत्तर विकास होगा तथा हिन्दी कार्यों में वृद्धि होगी।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए इससे जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ।

(सुमीत कुमार यादव)

सत्यमेव जयते

आयुक्त,
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण, जयपुर

संदेश

मुझे यह जानकर खुशी हो रही है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर एवं सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक लेखनी से विभागीय पत्रिका 'राजप्रभा' का प्रकाशन किया जा रहा है।

विभागीय पत्रिकाएं न केवल अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को एक मंच प्रदान करती हैं बल्कि राजभाषा नीति के कार्यान्वयन का दायित्व भी पूरा करती हैं। हिन्दी पत्रिका प्रकाशन का मुख्य ध्येय पत्रिका में छपी रचनाओं के माध्यम से हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना एवं इसके प्रयोग के प्रति जागरूकता का विकास करना है।

मैं पत्रिका की सफलता की कामना करते हुए सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को बधाई देती हूँ।

सुजाता

(सुजाता प्रियदर्शिनी)

सत्यमेव जयते

अपर आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय
जयपुर

प्रबंध संपादक की कलम से

'राजप्रभा' अपनी अनवरत यात्रा पर अग्रसर है। पत्रिका का यह अंक वरिष्ठ अधिकारियों के सफल एवं सुयोग्य निर्देशन का परिणाम है। यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी भाषा एवं संस्कृति से होती है। हमारी राजभाषा हिंदी के संबंध में यह गर्व का विषय है कि इसकी व्यापकता और सार्थकता दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

हिंदी पत्रिकाओं का मुख्य उद्देश्य भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के दिशा–निर्देशों का अनुपालन करते हुए कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना है। पत्रिकाओं का प्रकाशन भी काफी हद तक इस उद्देश्य को सफल बनाने में सिद्ध हो रहा है। कार्यालयों में हिंदी में कार्य करते हुए अधिकारी एवं कर्मचारी पत्रिका के माध्यम से अपनी भाषा के उद्‌गारों को अभिव्यक्त करके अपनी भाषा का मान बढाते हैं।

पत्रिका के इस अंक में सभी वर्ग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों की साहित्यिक अभिव्यक्तियों को समाहित किया गया है। अंत में मैं सभी रचनाकारों व पत्रिका प्रेमियों से अनुरोध करता हूं कि भविष्य में पत्रिका के प्रकाशन में अपनी लेखनी का सहयोग निरंतर बनाएं रखें।

(ऋषि यादव)

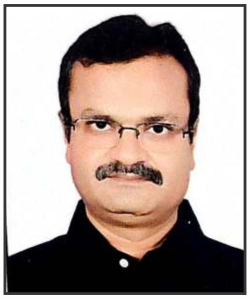

सत्यमेव जयते

सहायक आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर जयपुर

संपादक की कलम से

संपादक के प्रथम प्रयास के रूप में केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर तथा सीमा शुल्क, जयपुर की विभागीय पत्रिका 'राजप्रभा' का 30वां अंक सभी सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। पत्रिका का प्रकाशन व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए हर्षोल्लास का विषय है।

कार्यालयीन पत्रिकाओं के प्रकाशन से राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए प्रोत्साहन मिलता है वहीं हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार के साथ ही कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा को निखारने का अवसर भी मिलता है। पूर्व के अंकों की भांति पत्रिका का यह अंक भी राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए ही समर्पित है और विभिन्न विधाओं की रचनाओं से परिपूर्ण है। यह पत्रिका केवल साहित्यिक अभिव्यक्तियों का संकलन मात्र न होकर लेखकों की सृजनात्मक शक्ति एवं अभिव्यक्ति कौशल का मंच भी है।

मैं अपने उच्च अधिकारियों के प्रति आभार एवं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने पूर्ण संजीदगी के साथ पत्रिका प्रकाशन के लिए आत्मीयतापूर्ण संरक्षण, कुशल निर्देशन व मार्गदर्शन प्रदान किया। अपने शब्द रूपी रंगों से पत्रिका को सतरंगी बनाने के लिए सभी रचनाकारों, पाठकों एवं संपादन सहयोगियों को धन्यवाद देता हूं जिनके सद्प्रयासों एवं सहयोग से पत्रिका का नवीन अंक प्रकाशित किया जा सका है।

भविष्य में सभी से इसी प्रकार के सहयोग की आशा करता हूँ एवं पत्रिका से जुड़ने के लिए नए रचनाकारों को भी आमंत्रित करता हूँ।

राजेश अगरवाला

(राजेश अगरवाला)

संवाद/ज्ञान संग्रह - एक अनूठी पहल

अमित कुमार जैन, निरीक्षक (सी.सी.ओ.), जयपुर

किसी भी विभाग या संगठन/संस्था में अधिकारियों और कर्मचारियों के मध्य किसी भी माध्यम से संवाद होना आवश्यक है। अधिकारियों और कर्मचारियों के बीच स्पष्ट और प्रभावी संचार एक टीम की सफलता की कुंजी है। जब कर्मचारी विभाग के लक्ष्यों को समझते हैं और मानते हैं कि उनका उच्चाधिकारी उनके विचारों को महत्व देता है, तो यह उनके लिए एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है। परस्पर जीवंत संवाद विभिन्न पृष्ठभूमि, विचारधारा और दृष्टिकोण के कर्मचारियों को एक साथ लाने और एकजुट इकाई के रूप में प्रभावी ढंग से कार्य करने में सहायता प्रदान करता है। यह कर्मचारियों को उनकी दैनिक जिम्मेवारियों के साथ-साथ उद्देश्य की भावना देकर अनुभव में वृद्धि करता है और साथ ही उनके मनोबल, उत्पादकता और संतुष्टि को भी बढाता है। अंततः आपसी संवाद कार्यस्थल पर व्यक्तियों, टीमों और संस्था के लिए बेहतर परिणाम लाने में मदद करता है।

उपरोक्त को दृष्टिगत रखते हुए मुख्य आयुक्त श्री महेंद्र रंगा साहब ने सीजीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क, जयपुर जोन में माह अगस्त 2023 में कार्यभार ग्रहण करने के उपरान्त जोन के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से व्यक्तिगत रूप से जुड़ने के लिए मासिक रूप से एक पत्र के प्रकाशन की आवश्यकता महसूस की। जिससे राजस्थान जैसे विशाल भौगोलिक क्षेत्रफल वाले प्रदेश में दूरस्थ एवं सीमान्त क्षेत्रों तक पदस्थापित अधिकारियों/कर्मचारियों से पारस्परिक तादात्मय स्थापित हो सके। इसे मूर्त रूप प्रदान करते हुए एक नवाचार के रूप में माह सितम्बर 2023 से मासिक पत्र संवाद का प्रादुर्भाव हुआ। 'संवाद' पत्र का मुख्य उद्देश्य सभी अधिकारियों के मनोबल को बढ़ाना, उनके साथ विचारों को साझा करना, जोन में किये जा रहे कार्यों/ उपलब्धियों की जानकारी देना, विभिन्न परिणाम क्षेत्रों यथा राजस्व संग्रहण, कर अपवंचना आदि में अधीनस्थ आयुक्तालयों के प्रदर्शन की सराहना करना एवं आयुक्तालयों और अन्य केंद्रीय एवं राज्य स्तरीय जांच एजेंसियों यथा डीजीजीआई और स्टेट जीएसटी द्वारा दर्ज बड़े मामलों में कर चोरी हेतु अपनाई गयी क्रिया प्रणाली को साझा करना, बोर्ड द्वारा समय-समय पर विभिन्न विषयों पर जारी दिशा-निर्देशों से अवगत कराना, सरकारी कार्यों से इतर अन्य गतिविधियों में संस्थागत/व्यक्तिगत प्रदर्शन को सभी की जानकारी में लाना आदि है। 'संवाद' के माध्यम से किसी भी क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों को ना केवल सराहा जाता है अपितु उन बिन्दुओं को भी रेखांकित किया जाता है जिन पर और अधिक ध्यान दिया जाना है।

माह जनवरी 2024 तक 'संवाद' पत्र के पांच संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। प्रत्येक अंक को विभाग के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा काफी

सराहना मिली है। निश्चित रूप से यह एक अभूतपूर्व पहल है। प्राप्त प्रतिक्रियाओं से पता चलता है कि इस नवाचार से समस्त हितधारकों में एक नवीन उत्साह और उर्जा का संचरण हुआ है और वे अपने कर्तव्यों के प्रति और अधिक सजग हुए हैं। निःसंदेह यह जोन में सभी क्षेत्रों में बेहतर परिणाम प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगा।

एक अफ्रीकी कहावत है कि जब एक वृद्ध व्यक्ति मर जाता है तो एक पुस्तकालय जलकर राख हो जाता है। इसी प्रकार जब कार्यस्थल से जब कोई लम्बे समय से कार्यरत कर्मचारी सेवानिवृत होता है अथवा स्थानांतरित होता है, तो हम संस्थागत स्मृतियों अर्थात तथ्यों, परम्पराओं, मूल्यों, प्रणालियों और प्रक्रियाओं के संचित सेट, जिनसे एक संगठन बनता है, को खो देते हैं। अपने पूरे जीवन में हम अनगिनत सबक इकट्ठा करते हैं। कुछ सरल होते हैं और कुछ गहरे एवं उलझे हुए होते हैं। ये वे हैं जो हमें स्वयं के प्रति सच्चे रहना, बाधाओं को दूर करना और कठिन मेहनत, धैर्य और समर्पण से कार्य करना सिखाते हैं। हम जो कुछ भी जानते हैं, जो कुछ भी हमने अपने पूर्ववर्तियों से सीखा है, अगर हम इसे ठीक से एकत्रित और स्थानांतरित

नहीं करते हैं तो उसके नष्ट होने की संभावना होती है। कहने का अर्थ है की जो चीज पहले से मौजूद है और अच्छे तरीके से काम करती है, उसे दोबारा बनाने में उर्जा व्यर्थ करने कि आवश्यकता नहीं है, वह समस्या अतीत में हल हो चुकी है। अर्थात पहिये के पुनः आविष्कार की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता इस बात की है की हम संचित ज्ञान का भंडारण न करके उसको अधिक से अधिक साझा करें ताकि उसका लाभ सभी को मिले क्योंकि ज्ञान बांटने से बढ़ता है।

संवाद को प्रभावशाली बनाने एवं एक व्यापक रूप प्रदान करने के साथ साथ समस्त हितधारकों को इसका सहभागी बनाने की दिशा में मुख्य आयुक्त महोदय द्वारा यह निर्णय लिया गया कि 'संवाद' के अनुलग्नक के रूप में भिन्न-भिन्न विषयों पर लेखों के संकलन के रूप में ज्ञान संग्रह का प्रकाशन भी किया जाए। जिसके लिए समस्त सेवारत/सेवानिवृत अधिकारियों और कर्मचारियों से परिपत्र के माध्यम से यह आग्रह किया गया कि वे अपने ज्ञान के भण्डार को विभाग के सभी साथियों से साझा करें और अपने सेवाकाल के दौरान अर्जित अनुभव, श्रेष्ठ कार्य पद्धति, दैनिक कार्य प्रणाली में सुधार इत्यादि विषयों पर अपने विचार, आलेख, सुझाव, प्रेरणादायक प्रसंग, व्यक्तिगत अनुभव साझा करें जिन्हें संकलित कर 'ज्ञान संग्रह' के रूप में प्रत्येक माह 'संवाद' के साथ प्रकाशित किया जा सके।

इस पहल का भी सभी अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा स्वागत किया गया। परिणामस्वरूप विभाग के सभी वर्ग के सेवारत एवं सेवानिवृत अधिकारियों से अलग-अलग सम-सामयिक, महत्वपूर्ण व अछूती कई रचनाएं प्राप्त हुईं जिनमे से 'संवाद' के माह दिसम्बर, 2023 एवं जनवरी, 2024 के अंकों के साथ 'ज्ञान संग्रह' के संकलन के रूप में आठ (08) सर्वोपयोगी कृतियाँ प्रकाशित की जा चुकी हैं।

'संवाद' एवं 'ज्ञान संग्रह' के सभी अंक जोनल वेबसाइट https://cgstjaipur.gov.in पर उपलब्ध हैं। सीजीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क, जयपुर जोन के सभी सेवारत एवं सेवानिवृत अधिकारियों/कर्मचारियों से अपेक्षित है कि वे 'संवाद' को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए अपने सुझाव ई-मेल के माध्यम से cco-tech-jpr@gov.in अथवा cco-admn-jpr@gov.in पर प्रेषित करें तथा 'ज्ञान संग्रह' के प्रकाशन में अपना सक्रिय योगदान दें जिससे सभी हितधारकों को समुचित लाभ मिल सके।

अंत में निःशंक रूप से यह कहा जा सकता है कि 'संवाद' एवं 'ज्ञान संग्रह' मुख्य आयुक्त महोदय द्वारा अनुप्रेरित अनूठे उपकरण हैं जो सीजीएसटी परिवार के सभी सदस्यों के सर्वांगीण विकास में अनवरत उत्प्रेरक का कार्य करेंगे। ये सहभागिता बढाने की दिशा में यह एक अद्वितीय पहल हैं जो सीजीएसटी परिवार को सशक्त करने में अवश्य सहायक सिद्ध होंगे। आशा है कि जिन उद्देश्यों के साथ 'संवाद' एवं 'ज्ञान संग्रह' का प्रारम्भ हुआ है, उन्हें फलीभूत करने में ये निश्चित रूप से सफल होंगे। मुख्य आयुक्त महोदय के साथ-साथ इस प्रयास को सार्थकता एवं जीवंतता प्रदान करने में सम्मिलित सभी प्रतिभागी साधुवाद के पात्र हैं।

जिसके पास अच्छा स्वास्थ्य है उसके पास आशा है और जिसके पास आशा है उसके पास सब कुछ है, समय मूल्यवान है, लेकिन समय से भी अधिक मूल्यवान सत्य है।

बकवास

डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार त्रिपाठी, अपर आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अपील, जोधपुर

जब भी तुम कहती हो ''क्या बकवास बात करते हो,
निरर्थक प्रयास करते हो''

सोचता हूँ यदि न करता मैं बकवास
रहता यूँ ही उदास,
न जाने किस उधेड़बुन में
अपने ही मन के आँगन में
उठती गिरती तरंगों के क्रम में
भावनाओं के रण में
स्पंदित होते भाव
और मनोभाव
रह जाते अव्यक्त
किंतु जिन तरंगों ने है यात्रा की
मेरे मन से तेरे मन तक की
न रह सकेंगी वो अनुत्तरित
क्योंकि हैं वो अश्रुपूरित
ऐसी प्रार्थनाएँ
और भावनायें
जो हो चुकीं संप्रेषित
प्रेमाभिसिंचित
आयेगा उत्तर
बनकर अवसर
यदि हृदय है पवित्र
और रिक्त
कर रहा प्रतीक्षा
प्रिय मिलन इच्छा
वही बकवास
बनकर आस
आयेगा द्वार
स्वागत को उद्यत
बीज हुवा परिणत
बनकर मकरंद
फूल में बंद
करेगा सुरभित
और आनंदित
हे प्रिये ! तुम्हें भी
और
मुझे भी।

एक अच्छी किताब सौ अच्छे दोस्तों के बराबर होती है,
लेकिन एक अच्छा दोस्त पूरे पुस्तकालय के बराबर होता है।

पुराना फ्रेम

विवेक श्रीवास्तव, सहायक आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जयपुर

आज प्रकाश की शादी है

तुम बहुत याद आ रहे हो

कैसे गुज़रे हैं तुम्हारे बिना दो दशक!

अब तो निर्झर भी बड़ा हो गया है, बिल्कुल तुम्हारी तरह लगता है, हू-ब-हू।

लगता है, कभी दिखाऊँ तुम्हें।

तुम्हारी अमानत को कैसे सहेजा है मैंने।

...दीदी.... हल्दी की रसम का टेम (समय) हो रहा है, आप बताओ आपके यहाँ कैसे होता है, कैलाशी की आवाज़ आई।

पुरानी नौकरानियाँ भी घर की सदस्य ही बन जाती हैं।

40 साल से कैलाशी भी घर की सदस्य बन गई है।

बड़ा रौब चलाती है।

आई

कह कर मैंने डायरी बन्द की।

दूब तोड़ ले बग़ीचे से।

ये तो सब में एक जैसा ही होता है।

हल्दी से पहले तेल चढ़ेगा।

5 सुहागिनें चाहिए।

एक तेरी बहू हो जाएगी

एक तू, एक सामने वाली भाभीजी को बोल दे, उनकी लड़की को भी बोल देना, कन्या भी कर सकती है।

मैं तो ......कर नहीं सकती।

4 तो ये हो गईं, चाची को भी कहा तो था सुबह जल्दी आने को। रात को रुक जातीं तो सब संभल जाता।

चल ऐसा करना, तू दो बार चढ़ा देना। 5 का शगुन हो जाएगा।

तेल नीचे से ऊपर चढ़ता है, ऊपर से नीचे उतरता है, लड़के के तो। हल्दी में थोड़ा आटा मिला कर थोड़ी सी पीठी बना ले, तेल के बाद, वो लगेगी।

ये बच्चे भी अभी तक नहीं उठे, उनके खाने-पीने का भी देख लेना। आज मुझे भी हाफ़ डे तो दफ़्तर जाना ही पड़ेगा, ज़रूरी काम आया हुआ है।

प्रकाश के चेहरे पर मुस्कान झलक रही थी।

दीदी शेरवानी थोड़ी टाइट है, हल्का सा खोल दो, कल मैंने पहन कर देखी थी

अरे !

मुझे ताज्जुब हुआ।

बच्चों की ड्रैसेज़ भी देख लेना।

मेरे तो कुछ समझ में आता नहीं, सब निशि ही देखती थी, मेरे बस का नहीं। अब अपर्णा देख लेगी।

छः महीने ! केवल छः महीने भी प्रकाश, बिना पत्नी के नहीं रह सका!

केवल पिता बन कर नहीं रह पाता पुरुष, उसे पति और पिता की पदवी साथ-साथ चाहिए।

फ़ोन की घण्टी बजी।

घोड़ी-बाजे वाले का था।

प्रकाश !!!

हाँ तो दीदी, मेरी तो दूसरी है, पर अपर्णा की तो पहली शादी है।

उसे तो लगना चाहिये ना।

स्वाति को मैंने इसीलिये रिजैक्ट किया क्योंकि उसके एक बेटा था और मेरे बस का नहीं था, किसी और आदमी के बच्चे को एक्सैप्ट करना। मेरे मन में जो होता है, मैं वैसा ही करता हूँ, पोज़ नहीं करता।

आई एम नॉट हिप्पोक्रेट।

ठीक है 38 साल की उमर में 39 साल का पति मिल रहा है, अपर्णा को, प्रकाश व्यंग्यात्मक मुस्कान मुस्कुराया।

सब लोग होटल से कुछ पहले ही इकट्ठे हो जाएंगे । क़रीब आधा किलोमीटर बरात चला लेंगे। यहाँ पाड़-पड़ौसी बेकार बातें बनाते।

मेरे दोस्त वग़ैरह और स्टॉफ़ मिला कर करीब डेढ़ सौ-पौने दो सौ लोग तो हो ही जायेंगे। किस को छोड़ता? अब कोरोना गाइडलाइन्स में शादियों में मेहमानों की लिमिट दो सौ हो गई है।

रात को विदा के बाद मैं और अपर्णा

तो वहीं होटल में रुक जाएंगे, आप कैलाशी और बच्चे लौट आना। सुबह छोटू का ऑनलाइन एग्ज़ाम भी है, वो आप देख लेना कि लॉग-इन ठीक से हो जाये, मैंने स्कूल को कहा तो था कि बाद में ले लें, पर वो माने नहीं। दूसरी क्लास में ही जैसे कलैक्टरी की पढ़ाई करवा रहे हैं ।

सुबह अपर्णा और मैं आ जाएंगे। पहली विदा की रसम भी होटल से ही कर लेंगे । शाम को बाली की फ़्लाइट है। 21 की रात तक लौट आएंगे, तब तक आप देख लेना।

कुंवारी के भाग से परणी मर जाती है, कैलाशी बार-बार कहा करती।

वैसे निशि भाभी का सुभाव (स्वभाव) भी भौत (बहुत) अच्छा था, कभी गरम नहीं होती थीं, हँसती रहती थीं हमेशा।

प्रकाश भैया ने तो कभी पानी का गिलास भी ख़ुद नहीं लिया।

मम्मी और पापाजी को भी उन्होंने ही निभाया। मैंने तो देखा है ख़ुद, उनको संभालते हुए, बहुत अच्छी सेवा की दोनों की पर कभी चेहरे पे सल नहीं आया। आजकल कोई नहीं करता, मैंने भी भौत पिरवार (परिवार) देखे हैं ।

छोटे-छोटे बच्चे, आपकी नोकरी (नौकरी), आये-गये को देखना, सब कंट्रोल कर रखा था। कैलाशी ने पल्ले से नम आँखों के कोरों को पोंछते हुए कहा।

अरे तू तो बहुत अच्छी अंग्रेज़ी बोल लेती है कैलाशी।

मैं टेंसन (टैंशन) नहीं रखती दीदी। बोदर (बौदर) करने से क्या होगा? खींसे निपोरती, ज़र्दे को दाँतों के बीच से ठीक करती हुई कैलाशी बोली।

तू ज़र्दा खाना नहीं छोड़ेगी।

ही ही ही...

छूटता ही नहीं दीदी।

निशि भाभी भी भौत कहते थे... कैलाशी कैंसर हो जाएगा, मर जाएगी।

अब होगा जो देखा जाएगा। दीदी जिस दिन मरना लिखा होगा, मर जाएंगे।

निशि भाभी को ही देखो ना।

कहते हुए कैलाशी का स्वर धीमा हो गया, आँखे भर आईं। हफ़्ते भर में ही चली गईं।

10 साल हो गए थे उनकी शादी को, मेरे सामने ही तो ब्याह कर आई थी।

ये बेमारी (बीमारी) तो भौत ही बेकार आई है। कोई घर नहीं बचा, किसी का कुछ नहीं पता किसको गोबिंद कब बुला ले।

मेरे चाचा की बहू भी 3 बच्चे छोड़ के मर गई। बड़ा वाला तो अपने छोटू जित्ता है, छोटा बेटा 4 का है और एक लड़की डेढ़ साल की है।

अरे!

घर ही बिगड़ गया कैलाशी !

15 दिन बाद ही नाते ले आया मेरा भाई दूसरी भाभी।

आदमी को फ़रक नहीं पड़ता। दीदी बच्चे अनाथ हो जाते हैं। माँ दूसरी तो बाप तीसरा हो जाता है।

गोबिंद करे नये भाभीजी निशि भाभी जैसे ही अच्छे हों।

लगा जैसे कैलाशी भी डरी हुई है।

अब दीदी वैसे तो मैं भी दूसरी हूँ। पहले वाली की लड़की को तो उसकी नानी ले गई थी। मेरे आदमी ने तो उसे कभी पूछा ही नहीं। लोग तो ये ही समझते हैं कि मैं सौतेली माँ हूँ।

नानी ने ही पढ़ाया उसे?

नहीं पढ़ाया तो नहीं। नाम लिख लेती है। पर घर के काम सब सिखा दिए। परणा (शादी) भी दिया। 3-4 घरों में बर्तन माँजती है। झाड़ू-पौंछा भी करती है, एक फ़ैक्टरी में। अच्छा कमा लेती है। आदमी गाड़ी चलाता है। थोड़ी दारू पीता है।

अब दीदी औरत का जनम तो ऐसा ही है। मेरा आदमी ही कल मुझे भौत मारा। कोई और औरत के पास जाता है, मैं बोलूं तो लड़ता है। औरत ही औरत की दुश्मन होती है।

कितनी भोली है कैलाशी, घर के सारे पत्ते खोल के रख देती है और हल्की हो जाती है।

तू आज घर मत जाना।

वैसे घर में कोई काम नहीं है, सब होटल में ही है, फिर भी क्या पता कोई घर ही आ जाये।

अच्छा। ढोलकी निकाल लो दीदी। आपकी बिरादरी में शुभ काम में बजाते हैं।

तू तो पूरी दादी अम्मा है कैलाशी सब जानती है। किस बिरादरी में क्या होता है।

हाँ और नहीं तो, कित्ते (कितने) साल हो गए आपके यहाँ। कायतों

(कायस्थों) के सारे कश्टम (रिवाज़) जानती हूँ मैं, कैलाशी ने आत्मविश्वास से भरी मुस्कान बिखेरी।

गणेश जी गा लेते हैं और पाँच बन्ने। पड़ोस में बुलावा दे आती हूँ। लड्डू-पतासे (बताशे) बाँटना तो अब पुरानी बात हो गई। चाय नाश्ता करा देंगे। कुछ तो धूमधाम होनी ही चाहिए। पहले गणेश जी न्योंत दो। भैया तो बहुत ख़ुश हैं।

पहले तो मम्मी पापा ने बहुत धूमधाम से किया था भैया का ब्याव। एक ही तो बहू आनी थी। ख़ूब अरमान निकाले थे। मुझे भी बेस दिया था। कैलाशी की आँखें फिर भर आईं।

दीदी आदमी औरत के बिना नहीं रह सकता। औरत तो बच्चों के सहारे काट लेती है। आदमी को बिना औरत के रोटी-पानी की भी दिक़्क़त हो जाती है। ठीक है, घर दुबारा बस जाएगा भैया का, मन को समझाते हुए कैलाशी बोली।

आपको भी तो बीस साल हो गए......

हाँ हाँ चल तू थोड़ा घर का काम देख ले। मैं अभी आती हूँ, कहते हुए मैं ऊपर चली आई।

कहीं ईर्ष्या तो नहीं हो रही मुझे अपने ही भाई से, अपने औरत होने के कारण! दोनों की स्थिति समान ही है। मैं मेरे और प्रकाश के बच्चों की तुलना करने लगी। निशि का चेहरा बार-बार मेरे ज़ेहन में घूम जाता। इतनी जल्दी उसकी जगह प्रकाश अपर्णा को कैसे दे सकता है ?

10 साल का साथ और छः महीने में ही दूसरा सम्बन्ध ! साल भर भी नहीं रुका !!!

बहुत देर रात घर लौटे। लग ही नहीं रहा था जैसे ये प्रकाश की दूसरी शादी है। बच्चे मुझे ज़रूर सहमे से लगे। शायद साइकोलॉजीकली ऐसा मुझे लग रहा हो। अपर्णा को इतनी जल्दी माँ के रूप में कैसे स्वीकार कर पायेंगे? अभी तो निशि की चिता की राख ठंडी भी नहीं हुई है।

मुझे निशांत की बहुत याद आ रही थी।

निर्झर ज़ूम के ज़रिये विदेश से पूरी शादी में जुड़ा रहा। मुझे उसके चेहरे पर अजीब सी निरीहता लगी, जैसे उसे भी निशांत की याद आ रही हो। हालांकि उसने तो निशांत को केवल फ़ोटो में ही देखा है। 2 साल के बच्चे को पता ही क्या होता है।

ऐसा लगा, जैसे पूछ रहा हो कि आप अकेली क्यों रहीं?? क्या मेरे कारण??

कहीं ये मेरे मन का चोर ही तो नहीं?

वही चुहल, वही रस्में, जूता चुराई की चिरौरी, सब कुछ वही हुए।

मुझे अपर्णा में निशि दिख रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे निशि के साथ ही सब रस्में दुहराई जा रही हों। कभी लगता था जैसे निशांत और मेरी शादी हो रही है।

प्रकाश भले ही निशि को भूल जाये पर मैं उसे कभी नहीं भुला पाऊँगी। न कभी निशांत को ही।

डायरी पर निगाह पड़ी। खुली ही पड़ी थी। कहीं बच्चों न पढ़ न ली हो!!

निशांत से बात करने की इच्छा हो रही थी।

जैसे कम्प्यूटर कॉमन फ़ाइल सर्च करता है, कुछ ऐसा ही मेरे दिमाग़ में चल रहा था।

प्रकाश और मेरे जीवन की मैं तुलना करने लगी।

20 साल मैंने बिना निशांत के गुज़ारे हैं। निर्झर को बचपन में डॉक्टर को दिखाने के लिये किसी न किसी का सहारा लेना पड़ता था। तब कैब भी नहीं होती थी। रात को अकेले जाने में तो अब भी डर लगता है। अकेली औरत के लिए परिस्थितियाँ हर युग में हमेशा एकसी रही हैं।

जब से निशि गई है, मेरा सारा समय प्रकाश की गृहस्थी को संभालने में लगता है। प्रकाश को तो कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा। गृहस्थी की गाड़ी के दो पहियों में क्या औरत वाला पहिया ही ज़्यादा ज़िम्मेदारी उठाता है??

निशांत के जाने के बाद मैंने सारी ज़िम्मेदारी अकेले ही संभाली। कितना मुश्किल था निर्झर को अकेले पालना। उसके करियर के बारे में निर्णय लेना!

डायरी के पन्नों पर कैलाशी की कही बात लिखने की इच्छा हुई।

आदमी औरत के बिना नहीं रह सकता। औरत बिना आदमी के ज़िंदगी काट लेती है। औरत के मरने से आदमी को फ़र्क़ नहीं पड़ता, वो दूसरी औरत ले आता है। कुंवारी के भाग से परणी मर जाती है।

शायद वो कुँवारी अपर्णा थी और परणी निशि।

20 साल पहले की निशांत की याद फिर घिर आई।

20 साल/2 साल का निर्झर/पहाड़ सी ज़िंदगी/अकेले सफर! आँख से अश्रुधार बह निकली।

औरत के जाने से आदमी को फ़र्क नहीं पड़ता पर आदमी के जाने से औरत को फ़र्क़ पड़ता है।

निशांत तुम बहुत याद आ रहे हो। तुम्हारी जगह किसी दूसरे को दे पाना कल्पना से परे है। पुरुष और स्त्री की भावनाओं में बहुत अंतर होता है। कभी ख़याल ही नहीं आया कि दुबारा घर बसे।

समाज अब बहुत बदल गया है, पर जब तक नहीं बदला, तब तक बहुत लोगों ने बहुत कुछ भुगत लिया।

शायद पुरुष और स्त्री की भावनाओं के अंतर के कारण स्त्री पुरुष के बिना केवल माँ बन कर रह जाती है पर पुरुष केवल पिता नहीं, सदैव पति भी बन कर रहना चाहता है।

इसे पुरुष की दुर्बलता कहें या स्त्री की सबलता कि वो अकेले रह लेती है, पति की यादों के साथ पर पुरुष पुराने फ्रेम में नई तस्वीर जड़ते देर नहीं लगाता।

आज मुझे ये रण बुलाता है

हर्ष सक्सेना, निजी सहायक, अपर आयुक्त (सी.सी.ओ),
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर जोन, जयपुर

आज मुझे ये रण बुलाता है, कर्त्तव्य का हर कण बुलाता है,
चल रहा हूं संघर्ष पथ पर, सवार होकर विजय रथ पर,
छूटे हैं कुछ लोग पीछे परंतु उन्हें वापस पाऊंगा,
अभी फिलहाल मैं निडर, निर्भीक आगे बढ़ता जाऊँगा।

माँ ने रोकर किया विदा, मैं मान उसका बढ़ाऊंगा,
गिर-गिर कर भी धरती पर, मैं रोज़ खड़ा हो जाऊंगा।

विपत्ति आड़े डाल दो मेरे, कर दो चाहे घोर अंधेरे,
शत्रु परास्त कर खुद को सूरज की तरह चमकाऊंगा,

कर्त्तव्य पथ पर मैं अपने, यूं ही बढ़ता जाऊँगा,
मैं यूं ही बढ़ता जाऊँगा।

हर बार कैसे

ऋतु अग्रवाल, अधीक्षक, अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट, सीमा शुल्क आयुक्तलय, जयपुर

हर बार कैसे
मैं ग़लत
और तुम सही हो गए

मैं छोटी
और तुम बड़े हो गए

मैं गौण
और तुम मुख्य हो गए

शर्त थी
तुम्हें पाने के लिए
सब छोड़ आऊं

छोड़ दिया
और पराई हो गई
सबके लिए

पराए घर आने के लिए
कर आई पराया
अपनों को !!

कहने को दो घर रहे मेरे
पर दोनों घरों में
मैं पराई ही रही

किसी ने सोचा ही नहीं
कि मैं भी सोच सकती हूं

किसी ने बोला ही नहीं
कि तुम भी बोल सकती हो

मेरी जिंदगी के फैसले
सभी परायों ने किए
सभी बोले
बस मैं नहीं बोली
बोलती मगर
किसी ने पूछा ही नहीं

बचपन से आज तक
हर बात की अनुमति
लेना ज़रूरी था
पिता से भाई से पति से
और पुत्र से भी

सहेली के घर जाने की अनुमति
पढ़ने आगे बढ़ने की अनुमति
नौकरी करने की अनुमति
नौकरी छोड़ने की अनुमति

हमेशा यही समझा गया
मैं समझती नहीं हूं
हर बार यही बोला गया
मैं बोलती नहीं हूं

पर अब तुम बोलना
तुम सोचना
तुम समझना
अपने सभी फैसले भी
तुम खुद लेना
तुम बेटी हो मेरी
ताकत हो मेरी
फ़क्र हो मेरा

और सुनो
तुम पराई नहीं हो
और कभी हो भी नहीं सकती।

स्वस्थ जीवन जीना एक कला है

स्नेह ठेनुआ, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, उदयपुर

आज के वातावरण में अपने आप को स्वस्थ रखना एक बहुत बड़ी चुनौती है। सच मानिये तो आज के प्रदूषण वाले युग में स्वस्थ जीवन जीना एक कला है। जो हमें सीखनी पड़ेगी अन्यथा डॉक्टरों और अस्पतालों के चक्कर लगाकर अपना बहुमूल्य समय और मेहनत से कमाया हुआ धन खर्च कर लेंगे। आईये इस बारे में विस्तार से चर्चा करते है।

कंही सोशल मीडिया पर पढ़ा था कि "Who is your best life partner - Your wife, Son, Daughter, Mother, Father, Friends, Relatives... इसका सही जबाब है इनमें से कोई नहीं... आपका सही मायनों में सच्चा जीवन साथी है आपका शरीर Your Body। जिसमें आप जन्म से लेकर मृत्यु तक निवास करते है। आपका और आपके शरीर का बहुत गहरा रिश्ता है.... बाकि सारे रिश्ते बाद में आते है। लोग-बाग finanical investment को समझते है उसमे अपना पैसा भी लगाते है लेकिन health investment को नहीं समझते है। कोरोना के बाद लोगों में अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता आयी है। पहले हम समस्या के बारे में चर्चा करेंगे उसके बाद समस्या के निवारण की।

आजकल घर-घर में माइग्रेन, बेक पैन, अस्थमा, हार्ट प्रॉब्लम, गठिया, जॉइंट्स पैन, हार्ट सर्जरी, ब्रेन सर्जरी, सर्वाइकल स्पोंडाइलिट्सि, गैस एसिडिटी, ब्रेन डीफार्मिटीज, डायबिटीज Osteoporosis जैसी बीमारियाँ पायी जा रही है। इन सब बीमारियाँ का कारण क्या है सबसे पहला है - **वायु प्रदूषण...** वायु के अंदर फैक्ट्री और वाहनों से निकलने वाला जहरीला धुँआ धीमी गति से हमारी सांसो के माध्यम से हमारे नाजुक शरीर को लगातार नुकसान पहुंचा रहा है जो हमें और हमारी सरकारों को नहीं दिखाई दे रहा है। दिल्ली में आपने देखा केसे सरकार वाहनों के रजिस्ट्रेशन odd-even फार्मूला से चलने वाले यातायात से वायु प्रदूषण को रोकने कि नाकाम कोशिश की.. खेतों में जलने वाली पराली का कोई कारगर उपाय नहीं खोज सके। यह इस पृथ्वी पर मानवीय जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी है कि हम अच्छे से साँस भी नहीं ले पा रहे है। दूसरा है - **जल प्रदूषण...** पृथ्वी पर दो ही तरह से पानी पूरी तरह से शुद्ध है पहला बरसात का पानी और दूसरा बर्फ का पानी यानि नदियों का पानी जिनमें TDS (Total Dissolved Solvents) मानवीय उपभोग के अनुसार होता है। जमीन से निकले पानी में TDS ज्यादा होता है इसलिए घर-घर में RO System पानी purification के लिए लग गए है लेकिन उससे यह हो रहा कि पानी से मिलने वाले फायदेमंद लवण तत्व पानी से गायब हो रहे है और शरीर में बीमारियाँ अपना घर बना रही है। तीसरा है - **खाद्य (फूड) प्रदूषण....**WHO (वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाई जेशन) की स्टडी के अनुसार प्रत्येक भारतीय 110 gms फ्रूट्स एंड vegetables के साथ 30 gms पेस्टिसाइड भी खा रहा है। आए दिन हम अख़बारों में पढते है के कृषि उपज बढाने के लिए अंधाधुंध रासयनिक उर्वरकों का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है। गेहूं के पिसे आटे में घातक रसायन मिल रहे है। सब्जियों में oxytocin इंजेक्शन लगाकर रातों रातों उसकी साइज़ बढाकर बाजार में खाद्य प्रदार्थ के रूप में बेचा जा रहा है। सन् 1960 के बाद से फूड एंड वेजिटेबल को बहुत सारे पेस्टिसाइड और केमिकल के उपयोग से उगाया जा रहा है। 200° C पर गरम करने पर भी पेस्टिसाइड का असर कम नहीं होता है और घर में भोजन इससे कम ही तापमान में बनता है। फलों को कृत्रिम रूप से कैल्शियम कार्बोनेट से पकाया जा रहा है इसलिए फलों में वो मिठास नहीं है जो पेड़ से पके फलों में होती है। कॉमन डिजीज में एंटीबायोटिक का बार-बार (फ्रीक्वेंट) उपयोग से भी हमारा इम्यून सिस्टम ख़राब हो रहा। जिसके कारण एलर्जी अवं अन्य बीमारियाँ जल्दी जल्दी हो रही है। कोक और पेप्सी से कैंसर जैसी बीमारी हो रही है। इन पेय पदार्थों का Ph Value 2.4

के आसपास रहता है इसलिए इन्हें toilet cleaner भी कहा जाता है। लगातार बिगड़ती फूड habits, कोल्ड ड्रिंक्स, फ़ास्ट फूड, शराब एवं मादक पदार्थों का सेवन, तला-भुना भोजन, सिगरेट चाय कॉफ़ी, चोकलेट पेस्ट्री आदि के सेवन से स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा है।

आज से कुछ समय पहले Typhoid, Cholera, Measles, Plague, Polio, TB, Diphtheria जैसी बीमारियाँ थी। जो वातावरण में मौजूद बेक्टेरिया या वायरस से होती थी। मेडीकल साइंस ने इनका टीका/ औषधि बनाकर इनका उपचार खोज लिया। लेकिन BP, Diabetes, Cancer, Arthritis, Asthma, Obesity, Heart problem जैसी बीमारियाँ किसी भी बेक्टेरिया या वायरस से नहीं हो रही है। यह सब हमारी लाइफ स्टाइल डिजीज है। बिगड़ते स्वास्थ्य के तीन कारण वायु, जल एवं भोजन प्रदूषण के अलावा एक चौथा मुख्य कारण हमारी busy एंड stressful life - हर किसी को अपने जॉब/बिजनेस का टेंशन। भागती दौड़ती जिन्दगी में हमने जीवन को कहीं पीछे छोड़ दिया और भागते चले जा रहे है। समाज में आज क्या हो रहा है "We work 40 years to gain wealth. After 40 years we loose wealth to gain health"। यह वाकई सच है जब हम जवान होते है शरीर में ताकत होती हम पैसा, ओहदा कमाने के लिए अपने आप को झोंक देते है और 40 के बाद हम जब बीमार पड़ते है तो डॉक्टर के पास जाते है और अपना मेहनत से कमाया हुआ धन बीमारी पर खर्च कर देते है। कोरोना में हमने देखा कि लोगों ने कैसे पानी की तरह पैसे को बहाया। बेहतर मेडीकल सुविधा से इन्सान की औसत आयु तो बढ़ गयी है लेकिन क्वालिटी ऑफ़ लाइफ बहुत poor हो गयी है।

हम इस प्रदूषित वातावरण और busy एंड stressful जिन्दगी में अच्छा स्वास्थ्य कैसे प्राप्त करें उस पर बात करते है। उसे प्राप्त करने के लिए चार स्तम्भ है। जैसे पैसा कमाया (EARN) जाता है उसी प्रकार अच्छा स्वास्थ्य भी EARN किया जाता है। What Means for EARN : E फॉर Excercise, A फॉर Positive Attitude, R फॉर Rest, एंड N फॉर Nutrition.

सबसे पहले हम excercise की बात करेंगे। आपको प्रत्येक दिन अपने शरीर के लिए कुछ समय निकलना चाहिये... चाहे आप बगीचे में सेर करें, कोई भी अपना मनपसंद स्पोर्ट्स खेले, Gym जाएँ, योग करे, प्राणायाम करे कोई भी शारीरिक क्रिया करें जो आपको अच्छा लगे.. आप चौबीस घंटे में से कुछ समय अपने शरीर के लिए जरूर निकालें तो आप पाएंगे कि आपका उस दिन का शेष समय बहुत बेहतरीन निकलने वाला है। Excercise से यह होगा कि आपके प्रत्येक अंग में ऑक्सीजन का संचार होगा और आप पूरे दिन ऊर्जावान रहोगे और खुश रहोगे। कहते है ना शरीर को तकलीफ दोगे तो यह आपको आराम देगा और इसे आराम दोगे तो यह आपको तकलीफ देगा। दूसरा है... life में पॉजिटिव attitude रखें और लोगों की हेल्प करें। अपने दिलो दिमाग से negativity को दूर कर दें ... इससे यह होगा कि आपके शरीर में पॉजिटिव रसायन बनेगे और आप स्वस्थ रहेंगे। तीसरा है... अपने शरीर को प्रॉपर रेस्ट दें भरपूर नींद लें जब आपका शरीर अच्छा स्वस्थ होगा तो आपको नींद भी अच्छी आयेगी। चौथा और अंतिम है... प्रॉपर Nutrition लें। हम क्या खा रहे है यह हमें पता होना चाहिये। हमारे खाने में विटामिन एंड मिनरल्स कम होते हैं जबकि कोलोस्ट्रोल, फेट्स एंड प्रोटीन ज्यादा है। कहते है कि EARN के पहले तीन स्तंभ पर तो वर्क कर लोगे लेकिन nutrition पर कैसे कंट्रोल करोगे.... आज के समय में बाज़ार में बिकने वाले प्रदूषित खाद्य पदार्थो से कैसे बचे रहोगे यह आपकी रसोई के माध्यम से आपके शरीर में पहुँच रहा है और हमें बीमार कर रहा है। इसके लिए आप आर्गेनिक फूड लें और रासयनिक उर्वरकों से उगाए दूषित खाद्य पदार्थों से दूर रहें। इसके लिए आप अपने घर में किचन गार्डन भी बना कर आर्गेनिक फूड प्राप्त कर सकते है। लेकिन यह इतना आसान भी नहीं है इसलिए चौथा टास्क बहुत ही challenging है। इसका कुछ हद तक एक और विकल्प है उपवास।

अच्छा स्वास्थ्य पाने के आप आज के समय अनुसार कारगर Intermittent Fasting का भी सहारा ले सकते है जिसमे आप अपने अनुसार प्रतिदिन 12, 14 या 16 घंटे का उपवास रख सकते

हो और क्रमशः 12, 10, 8 घंटे के समयावधि में ही भोजन सामग्री ग्रहण करे। आप सप्ताह में पूरे दिन का भी उपवास रख सकते हो। आईये जानें कि खाली पेट रहना हमारे स्वास्थ्य के लिए कैसे लाभदायक है। खाली पेट रहने से हमारी कोशिका के अन्दर मौजूद digestive enzime शरीर में मौजूद undigestive फूड particles जो आपके शरीर में विभिन्न बीमारियाँ पैदा कर रहा है, शरीर में उसको खाकर सेल में कन्वर्ट करने की capacity रखते है और इससे शरीर में अन्दर कोशिका की सफाई हो जाती है। इस थ्योरी को ऑटोफिजी (AUTOPHAGY) कहते है। सरल शब्दों में कहें यदि हम शरीर में मौजूद कोशिका को ऊपर से खाने के रूप में आहार नहीं दे तो वो कोशिका शरीर में विभिन्न रूपों में मौजूद भोजन को अपने आहार के रूप में लेती है और उससे शरीर में ऊर्जा का निर्माण होता है, उससे हमारा शरीर चलता है। जब हम उपवास नहीं करते है तो शरीर में मौजूद कोशिका को निरंतर बाहर से आहार मिलता रहता है और उससे वो अपनी ऊर्जा बनाती रहती है और शरीर में पड़े unwanted फूड materials का वो उपभोग नहीं कर पाती है जिसके कारण शरीर में बीमारियाँ होती चली जाती है। हमारे ऋषिओं मुनिओं ने भी उपवास पर जोर दिया। लोग इसकी पालना कर सके इसलिए इस विषय को व्यक्ति के पूजा आराधना से भी जोड़ दिया गया था।

अहंकार यानि विनाश, मनोरोग और बर्बादी

सुशील विश्नोई, निजी–सहायक, प्रधान–आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर

पेड़ का सहारा प्राप्त करती हुई एक लता पेड़ से भी ऊंची चढ़ गई, पेड़ से अधिक ऊंची होने के कारण उसे अहंकार हो गया और वो पेड़ को आगे बढ़ने के, ग्रोथ करने के गूढ़ सूत्र सिखाने लगी। पेड़ ने कहा कि वो लता की उन्नति से प्रसन्न है लेकिन लता का घमंड मानो सातवें आसमान पर था क्योंकि उसकी ऊंचाई सबसे अधिक थी। लता को लगने लगा था कि वो अत्यंत कम समय में ही पेड़ जितनी श्रेष्ठ और काबिल हो चुकी है। जब प्रेमपूर्ण व्यवहार से भी अहंकार कम न हो तो समझ लीजिए विनाश निश्चित है। एक दिन जबरदस्त तूफान आया, भीषण तूफान में पेड़ तो डटकर खड़ा रहा लेकिन लता जड़ सहित नष्ट हो गई। अहंकार मृत्यु का मार्ग है, यह पुनः सिद्ध हुआ।

माता–पिता और गुरू

दूसरी समझने योग्य बात ये भी है कि जिसका सहारा लेकर जीवन में कुछ पाया है, उन्हें कभी अपने से कमतर नहीं समझना चाहिए। लता इसलिए उत्थान कर पाई क्योंकि उसे पेड़ का सहारा मिला। हमारे पेड़ हैं माता–पिता, अध्यापक, स्कूल और कॉलेज के गुरुजन और हमारे मित्र–रिश्तेदार। हम भले ही जीवन का सर्वोच्च सोपान छू लें लेकिन अपने माता–पिता और गुरुजनों से खुद को श्रेष्ठ मानने का अहंकार न पालें। याद रहे कि हमारा पद, ज्ञान, पैसा और रूतबा सब अस्थाई है, हमारे माता–पिता और गुरुजन स्थायी हैं। अतः खुद को इनसे बड़ा मानने की मूर्खता करने से बचें।

।।मैं भारत का बेटा हूँ।।

विशाल सोलंकी, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, उदयपुर

कोई कहता है सैटेलाइट,
कोई मशीन कह देता है
यान नहीं चंद्रयान हूँ मैं,
विक्रम हूँ और प्रज्ञान हूँ मैं
हिंद की लाज रखने हूँ आया,
चंदा पर आ बैठा हूँ
मैं भारत का बेटा हूँ, मैं भारत का बेटा हूँ।।

LMV के तृण को तूणीर कर,
14 जुलाई को अमर कर,
41 दिन के तम का सफर कर
बड़ी दूर को आया हूँ
चंदा पर उतरने की मंशा में
तन को बहुत गरमाया हूँ
अपनी गोदी में छुपा कर
प्रज्ञान साथ में लाया हूँ
विक्रम मैं कहलाया हूँ
उड़ी धूल के रुकने तक
कुछ घंटों को बैठा हूँ
फिर उठकर लगा हूँ काम पर
मैं भारत का बेटा हूँ, मैं भारत का बेटा हूँ।।

जहां अब तक कोई ना पहुंचा
उस हिस्से पर आया हूँ
14 दिन का जीवन मेरा
पर उम्मीदें बहुत सी लाया हूँ
अल्पायु हूँ, पर जिज्ञासु हूँ
सो इतनी दूर तक आया हूँ

परिश्रमी हूँ, ये सिद्ध मैं कर जाऊंगा
अपने छोटे जीवन का मोल चुका
यहीं कहीं मर जाऊंगा
डरना ही क्यों, जब सबके दिल में समाया हूँ
श्रम से अपने ज्ञान ढूंढ के लाऊंगा
2000 किलो वजन है मेरा
कहना मत कि छोटा हूँ
मैं भारत का बेटा हूँ, मैं भारत का बेटा हूँ।।

कभी कवियों की बातें थीं
शायरों की सौगातें थीं
कभी किसी को मान था रूप पर
कभी दाग की घातें थीं
कभी इसे माना था शीतल
कभी बदलती मुलाकातें थीं
सबके राज ढूंढने हूँ आया
जहां कभी काटी मेरे दो भाइयों ने रातें थीं
चंद्रयान 'एक' और 'दो' का,
अनुज मैं थोड़ा छोटा हूँ
सब बातें पता लगाने अब,
मैं यहां पर लौटा हूँ
मैं भारत का बेटा हूँ, मैं भारत का बेटा हूँ।।

तिमिर का सफर किया है मैंने
रोशन हो, समूल सो जाऊंगा
इस निर्जन ग्रह पर अकेले
यहीं कहीं खो जाऊंगा

पर अपने खोने से पहले
जीवन की जड़ बन जाऊंगा
चंदा की धूल छान कर ज्ञानवान बन जाऊंगा
हिंदुस्तान की आन बढ़ाकर, ज्योतिमान बन जाऊंगा
आम नहीं समझो तुम मुझको
शिव शक्ति बन बैठा हूँ
मैं भारत का बेटा हूँ, मैं भारत का बेटा हूँ।।

विश्राम का समय नहीं
अल्प समय में सो जाना है
सोने से पहले ही मुझको
हिंद का मान बढ़ाना है
चंद्रयान 4, 5 और 100 बन,
लौट के फिर फिर आना है
अबकी बार आना है फिर से,
इंसा को भी लाना है
धरती मां को आबाद किया ज्यों
यहां भी बस्ती बसाना है
इसीलिए तो 'दो' से 'तीन' बन
फिर यहां पर लौटा हूँ
हिंद की धरती पर जन्मा,
अभी यहां इकलौता हूँ
मैं भारत का बेटा हूँ, मैं भारत का बेटा हूँ।।
ऋषि मुनियों से प्रारंभ हो
शिवन और सोमनाथ तक पहुंचा हूँ
हिंद के सपूतों का ज्ञान और विज्ञान हूँ मैं
दक्षिण चंदा का पहला रोवर किसान हूँ मैं
रोबोट बन विक्रम से निकला, हिंद व इसरो का निशान हूँ मैं
26 किलो का छोटा हिंदुस्तान हूँ मैं, प्रज्ञान हूँ मैं
इंशा की विशाल इप्शिता का,
श्रम-फल और मीठा पेठा हूँ
कई सारे रहस्य जानने
मामा की गोदी जा बैठा हूँ
मैं भारत का बेटा हूँ, मैं भारत का बेटा हूँ।।

शिव शक्ति पर उतरा
हिंद की प्रज्ञा धर्म हूँ मैं
दृढ़ निश्चयी प्रखर विज्ञानी
परिश्रमियों का कर्म हूँ मैं
अंतरिक्ष की ओर बढ़े अनवरत,
यानों का अगला क्रम हूँ मैं
चंदा के दखिन में उतरा,
पहला लैंडर विक्रम हूँ मैं
सोम पर मैं बुद्ध को पहुंचा
छोटा श्रीहरिकोटा हूँ
मैं भारत का बेटा हूँ, मैं भारत का बेटा हूँ।।
दो सप्ताह के जीवन पश्चात,
दो सप्ताह की रात है
सिर्फ अंधेरा नहीं है इसमें
अतिशीत का घात है
उसके बाद पुनः मेरी
सूर्य देव से मुलाकात है
उम्मीद तो नहीं जीवन की,
पर इन रातों में वो बात है
जो बताएगी सबको कि
मैं मृत हूँ या फिर लेटा हूँ
मैं भारत का बेटा हूँ
करो कामना मेरे जीवन की
मैं भारत का बेटा हूँ, मैं भारत का बेटा हूँ।।

खड़ूस

मनोज कुमार मनवानी, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण, जयपुर

उसके घर का मेन गेट खुला रह गया था, नंदिनी गाय लॉन में तांक-झांक करती चली आई थी, भूख में लॉन की थोड़ी हरी दूब किनारों से खाने का सोच भर रही थी कि खड़ूस बाहर आ गया देखकर उसको लट्ठ लेकर पिल पड़ा, जब तक बाहर की ओर भागती, खड़ूस ने गरीब गाय की हड्डियां नरम कर दीं इसी मारपीट में दो चार गमले भी गिरकर टूट गए, नंदिनी को भगाकर खड़ूस भुनभुनाता हुआ गेट बंदकर अंदर चला गया।

गली का शेरू कुत्ता भी गाय के पीछे पीछे ही घुस आया था, खड़ूस का रौद्र रूप देखकर अंदर ही छुप गया। शेरू जानता था कि खड़ूस को पता चलने का मतलब था तेल पिलाए लट्ठ से अच्छी खासी मालिश मरम्मत के बाद ही निकल पाएगा, सोच रहा था दीवार कूद जाए लेकिन ऊँचाई के कारण प्रयास विफल हो गया, इसीलिए अब बिना भौंके चुपचाप लॉन के कोने में बेल के झुरमुट में सिकुड़कर सो गया, और माँ के मीठे मीठे सपने लेने लगा।

नींद में 'माँ जैसी मालकिन' सपने में आई, प्यार से पुचकारते हुए मलाई रोटी खिला रही थी नंदिनी भी वहीं बैठकर माँ के ममता भरे हाथ से चारा खा रही थी, जैसे ही अंदर से खड़ूस के बाहर आने की आवाज आती, माँ दोनों को इशारे से बाहर भेज देती, खड़ूस को ये सब पसंद न था, माँ को हमेशा बुरा भला बोलता रहता, कोई संतान न थी उसका दोष भी माँ पर मढ़ देता, माँ शांत भाव से सब सुनकर भी जवाब न देती थी, नंदिनी और शेरू पर अपनी ममता लुटा देती थी इसी में उन्हें सुख मिलता था। कुछ दिन पहले ही माँ की माताजी की तबियत ठीक न होने से जल्दबाजी में पीहर जाना पड़ा इसीलिए उन दोनों के खाने पीने की व्यवस्था करके न जा पाई थी, आज गेट खुला देखा तो 'माँ आई होगी' सोचकर दोनों ताँकते झाँकते अंदर चले आए थे।

तभी खड़ूस के चीखने की आवाज से शेरू की नींद टूटी, अंधेरा घिर आया था शेरू ने दबे पाँव अधखुली खिड़की से अंदर झांका, खड़ूस को दो बदमाशों ने कुर्सी पे बांध रखा था और उससे तिजोरी की चाबियाँ मांग रहे थे, न बताने पर उसी चिकने लट्ठ से खड़ूस की हड्डियां सेक रहे थे जिससे नंदिनी को मार लगी थी, खड़ूस के मुंह में कपड़ा ठूंसा हुआ था जिससे उसके 'ऊह आह' चिल्लाने की अजीब सी धीमी आवाज से शेरू की हंसी छूट जाती थी। वो बदमाशों से मन ही मन फरमाइश और मिन्नत करता और मारो इस निर्दयी को, अकल ठिकाने आ जाए इतना मारों कि दूसरों को मारने से पहले इसकी रूह कांप जाए।

आखिर मार से तो भूत भी भागते हैं खड़ूस ने चाबियों का पता बता दिया, शेरू मन ही मन खुश था जिस धन को जमा कर कभी दान-धरम भी न किया आज से वो खड़ूस के भी काम का न रहेगा।

चोर ने माँ के कमरे की तिजोरी खोल दी और उनके सब रुपये गहने बैग मे भरने लगा। अरे ये क्या, ये तो माँ का मंगलसूत्र है, उनको कितना प्रिय है ये। नहीं ये नहीं ले जा सकता ये बदमाश, शेरू बेचैन हो उठा, क्या करूँ कैसे बचाऊ मंगलसूत्र, माँ क्या सोचेगी, शेरू के होते हुए मंगलसूत्र कैसे चोरी हो गया और ये तो खड़ूस के लिए ही पहनती है माँ, अब उसे खड़ूस की हालत पर दया आने लगी, कितना बुरा मार रहें हैं इतना तो उसे कभी खड़ूस ने भी नहीं मारा। उसे याद आया पिछले साल वो पड़ोस के मौहल्ले के कुत्तों में घिर गया था वहाँ खड़ूस भी किसी काम से आया हुआ था तो चुपचाप खड़ूस की आड़ में चलकर ही उसकी जान बची थी, किसी की हिम्मत न पड़ी थी उसपर अटैक करने की, उनका सरदार गुर्राया था मालिक के साथ है बे, इसीलिए बच गया अगली बार नहीं छोड़ेंगे।

शेरू का गुस्सा सातवें आसमान पर था, मगर माँ से मुश्किल समय में शांत रहना सीख लिया था वो गेट के पास गया सामने मंदिर के पास बैठी नंदिनी अपने घाव जीभ से चाटकर मरहम पट्टी कर रही थी। उसने धीमी आवाज में उसको बुलाया और सारी बात बताई। माँ के

मंगलसूत्र की चोरी की खबर जानकर वो भी क्रोधित हो गई, उसने गबरू सांड शिवा को रम्भाकर आवाज लगाई वो तुरंत वहाँ पहुच गया तीनों ने प्लान बनाया जैसे ही चोर बाहर निकलेंगे शेरू भौंक कर खबर करेगा कि किस तरफ से निकले, एक तरफ से नंदिनी दूसरी तरफ से शिवा उनपर अटैक करेगा, तब तक शेरू खड़ूस की रस्सी खोलकर बाहर लाएगा। प्लान बनाते ही तीनों अपनी-अपनी जगह छुपकर मुस्तैदी से तैनात हो गए, तभी धीरे से दरवाजे के खुलने की आवाज आई, चोर माल का थैला लेकर दबे पाँव चम्पत हो रहे थे।

फिर क्या था, शेरू भौंकते हुए टूट पड़ा उन पर, अंदर से खड़ूस 'शेरू बचाओ शेरू बचाओ' पुकारने लगा। काट-काट के शेरू ने बुरा हाल कर दिया, चोर किसी तरह शेरू से छूटते छुड़ाते डोली कूद गए। बाहर नंदिनी और शिवा उनके स्वागत को तैयार थे, दोनों ने अपने सींगों से उठा उठाकर जो पटका छठी का दूध याद दिला दिया उनको, शेरू भी तब तक अंदर जाकर खड़ूस की रस्सियां खोलकर बाहर ले आया, दोनों चोर पिट पिट के निढाल हो चुके थे। शेरू का गुस्सा अब तक शांत न हुआ था, 'मंगलसूत्र' छूने वाले चोर का हाथ चबा डाला उसने। हंगामा सुनकर पड़ोसी भी जागकर बाहर आ गए। पुलिस की पी सी आर वैन बुलाकर चोरों को पुलिस में पकड़वाया गया।

तभी मालकिन का ऑटो भी आ रूका, खड़ूस ने उतरते ही उन्हें गले लगा लिया, लगा फूट फूटकर रोने, आंखों से गंगा-जमुना थमने का नाम न लेती थी उसके, शेरू नंदिनी शिवा तीनों ने घेर लिया उन्हें।

शेरू ने बैग से 'मंगलसूत्र' निकालकर माँ को लौटा दिया और माँ-बाप ने स्नेह से अपने बच्चों को सीने से लगा लिया।

आओ कुछ देर बात करें हम सारे वतन की

हेमंत कुमार शर्मा, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, आयुक्तालय, अलवर

आओ कुछ देर बात करें हम सारे वतन की
प्रणाम कर तिरंगे को शहीदों को नमन की।

कितना सिन्दूर कितने धागे कितने साए उठे
कहानी बहुत कठिन है आजादी के हवन की।

आजादी के आराम में गुलामी भूलना नहीं
पीड़ा हमेशा याद रखना गोरों के दमन की।

सुरक्षा वतन की है आज सैनिकों के हाथ
बात करें हम सियाचिन के शीत, गर्म लू के तपन की।

वतन हमारा हम वतन के ये गीत गाते हुए
आओ जिम्मेदारी लें हम सब अपने चमन की।

आओ कुछ देर बात करें हम सारे वतन की
प्रणाम कर तिरंगे को शहीदों को नमन की।

राजभाषा समारोह 2023

केन्द्रीय वस्तु व सेवाकर एवं सीमा शुल्क
जयपुर

जयपुर

केन्द्रीय वस्तु व सेवाकर एवं सीमा शुल्क

जयपुर

जयपुर

जयपुर

केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जयपुर द्वारा प्रदत्त राजभाषा हिंदी डिक्टेशन/ टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार योजना 2022-23 प्रमाण-पत्र वितरण

केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर द्वारा प्रदत्त हिंदी डिक्टेशन/टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार योजना 2022-23 प्रमाण-पत्र वितरण

सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर द्वारा प्रदत्त हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार योजना 2022-23 प्रमाण-पत्र वितरण

राजभाषा पुरस्कार

केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर को वर्ष 2021-22 के दौरान हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने हेतु क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा प्रदत्त प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री मुकेश कटारिया, अपर आयुक्त

प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री अशोक कुमार बिरानियां, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर को वर्ष 2021-22 के दौरान हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने हेतु क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा प्रदत्त द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करती हुई सुश्री नीता शुक्ला, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री प्रेम प्रकाश मीना, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, (का.–1) जयपुर द्वारा प्रदत्त पुरस्कार

हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने पर ''क'' वर्ग में सांत्वना द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री दिनेश सिंह देवल,अपर आयुक्त, सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर

''ख'' वर्ग में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री राजेन्द्र सिंह मीना, सहायक आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर

विभाग के अनमोल रत्न

शालिनी वर्मा, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

हमारे विभाग के कई बहादुर और प्रतिभाशाली ऑफिसर जिनके बारे में हममें से अधिकतर शायद न जानते हों, के बारे में कुछ जानकारी इन्टरनेट के द्वारा जुटा कर आप सब के समक्ष इसलिए रख रही हूँ कि हम अधिकांशत: विभाग की कमियों या समस्याओं के बारे में चर्चा करते हैं और हमारा ध्यान इस महकमें की ताकत और साख पर नहीं जा पाता। आशा है विभाग के इन रत्नों की गौरवपूर्ण उपलब्धियां हमारा मार्गदर्शन करेंगी। बहुत संभव है कि विभाग के लिए त्याग और समर्पण के उदाहरण रहे अनगिनत यशस्वी अधिकारी इस लेख की परिधि में न आ पाए हों। दिए गए चुनिंदा अधिकारियों के बारे में जानकारी भी इन्टरनेट पर उपलब्ध सामग्री के आधार पर दी जा रही है :

श्री दयाशंकर (1952–2012)

केन्द्रीय उत्पाद व सीमा शुल्क में 1978 बैच के अधिकारी तथा बम्बई कस्टम्स में आयुक्त रहे श्री दयाशंकर का नाम अपने विभाग में ही नहीं बल्कि पूरे देश में एक जांबाज़ अफसर के रूप में प्रसिद्ध रहा है। इन्होंने सोने की तस्करी में लिप्त दमन, गोवा तथा बम्बई में फैले तस्कर रैकेट का सफाया करने का बीड़ा उठाया। कुख्यात दाऊद इब्राहीम के विरुद्ध कार्यवाही में इन्होंने उसके भाई अनीस को गिरफ्तार कर तस्करी की दुनिया में तहलका मचा दिया था। एक बार तो दाऊद का पीछा करते हुए वे पकिस्तान के इलाके में पहुंच गए जहाँ उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया, तब भारत सरकार ने अंतर्राष्ट्रीय एजेंसी की मदद से उन्हें रिहा करवाया। दमन में पोस्टिंग के दौरान उन्होंने माफिया डॉन बाकिया तथा जोगिनानी को गिरफ्तार कर तस्करी गतिविधियों का खात्मा कर दिया था। श्री दयाशंकर की निडरता का प्रमाण इससे मिल जाता है कि उन्होंने COFEPOSA के प्रकरण में गोवा के पूर्व मुख्यमंत्री की जांच पड़ताल की। यही नहीं, वे अपने सहकर्मियों के लिए ढाल बन बड़ी से बड़ी हस्तियों का निडरता से सामना करने में हिचकते नहीं थे। 1992 में गोवा के मुख्यमंत्री चर्चिल अलेमाओ के तस्करी में लिप्त भाई की हत्या के प्रकरण में उन्होंने अपने सहकर्मी श्री कोस्टा फर्नांडिस के पीछे पड़ी CBI से लोहा लिया और आखिर श्री कोस्टा फर्नांडिस को इस प्रकरण में विजय प्राप्त हुई।

मुंबई अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पदस्थापना के दौरान उनके खौफ के कारण दुबई, सिंगापुर, हांगकांग और कई अन्य देशों में उनकी ड्यूटी चार्ट की जानकारी जुटा तस्करों को अलर्ट किया जाता था। उनकी उपलब्धियों को देखते हुए विभाग द्वारा दिए 22 लाख रुपए के कैश रिवॉर्ड को उन्होंने लेने से मना कर दिया जबकि अपने बच्चे का इलाज कराने के लिए उन्हें अपने साथी से उधार मांगना पड़ा था।

स्टडी लीव पर वे ऑस्ट्रेलिया गए जहाँ पी एच डी पूर्ण करने हेतु उनके द्वारा दी गई स्वैच्छिक सेवानिवृति काफी समयांतराल के बाद 2006 में स्वीकृत की गयी।

सन् 2012 में ऑस्ट्रेलिया में रहते हुए इस नामी शख्सियात ने बीमारी के कारण इस संसार को अलविदा कह दिया।

श्री बापू लक्ष्मण लोखंडे (1922– 1978)

श्री बापू लक्ष्मण लोखंडे ने विभाग में 1944 में एक सिपाही के पद पर बम्बई में नियुक्ति प्राप्त की और 1975 में जमादार के पद पर पदोन्नत हुए। बॉम्बे dock पर dock इंटेलिजेंस यूनिट में रहते हुए बम्बई के तस्करों में उनके नाम का अच्छा खासा भय व्याप्त था। श्री बापू लक्ष्मण लोखंडे पुख्ता आसूचना एकत्र करने के मास्टर थे और प्रतिबंधित माल के अनेकों प्रकरण उनकी सूचना पर विभाग द्वारा दर्ज किये गए। अपनी सुरक्षा की चिंता किये बगैर, वे बेखौफ अंडरवर्ल्ड तस्करों के खिलाफ इंटेलिजेंस जुटाते रहे। उनके अदम्य साहस, ईमानदारी तथा कार्य के प्रति समर्पण के लिए उन्हें दो बार राष्ट्रपति पुरस्कार 1964 तथा 1979 (मरणोपरान्त) से नवाजा गया। उन्हें भारतीय सीमा शुल्क का कोहिनूर कहा जाता है। विभाग में उनके अभूतपूर्व योगदान के सम्मान स्वरुप उनकी मूर्ति कस्टम्स हाउस, मुंबई के पास के चौक में स्थापित की गयी है।

श्री बी.जी.एन. अयंगर (1931–2019)

श्री बी.जी.एन. अयंगर ने 1956 में सीमा शुल्क विभाग बम्बई में एग्जामिनर के रूप में नियुक्ति दी, 1962 में अप्रेज़ तथा डी.आर.आई. में रहते हुए 1983 में सहायक निदेशक के रूप में पदोन्नति पाई। इन्होंने करीब आधे दर्जन कर्तव्यनिष्ठ सहकर्मियों की टीम का गठन किया और तमाम आयात और निर्यात से जुड़े बड़े और क्लिष्ट कर चोरी के मामले उजागर किये, उनके कार्यकाल में कोई भी बड़ा गैंग उनकी पैनी निगाह से बच न सका, कई ऑपरेटर्स को उन्होंने कोफेपोसा एक्ट में गिरफ्तार किया। कीमती घड़ियाँ, जापानी नायलोन बटन, स्पेनिश केसर जैसे प्रतिबंधित वस्तुओं के उस समय के लाखों के मूल्य के प्रकरण के अतिरिक्त 1966 में 34000 तोला स्वर्ण की तस्करी की सबसे बड़ी बरामदगी की जो गावकर केस के नाम से उस समय का सबसे प्रसिद्ध प्रकरण था, इसी के क्रम में 57000 तोले सोने की भी रिकवरी की गयी। इस प्रकरण में कई तस्करों जिसमें स्मगलिंग सिंडीकेट किंगपिन टी जी गावकर शामिल था, को जेल पहुंचाया गया।

1982 में ड्यूटी करते हुए उन पर पाकिस्तानी तस्कर ने गोली चलाई, जिससे वे गंभीर रूप से घायल हुए। इस घटना के बाद भी वे बेखौफ डी.आर.आई. में सेवानिवृति (51.05.1989) तक अपनी सेवाएं देते रहे। उन्हें अपनी जान की बाजी लगा कर बड़ी बरामदगी करने तथा अभूतपूर्व सेवा देने हेतु 1972 में पहला राष्ट्रपति पुरस्कार तथा विभाग को अति विशिष्ट सेवाएं देने हेतु दोबारा 1980 में राष्ट्रपति पुरस्कार प्रदान किया गया।

श्री कोस्टा फ़र्नान्डिस (1954–)

1979 में प्रिवेटिव ऑफिसर के पद पर इन्होंने गोवा में विभाग ज्वाइन किया था। वे फुटबॉल के अच्छे खिलाडी और कराटे में ब्लैक बेल्ट रहे हैं। उन्होंने सोने की तस्करी में लिप्त बड़े नामी गिरामी हस्तियों के नाक में मे दम कर दिया था। उनके द्वारा बनाये सबसे चर्चित सोने की तस्करी के प्रकरण में गोवा के मुख्यमंत्री अलेमाओ चर्चिल को जेल जाना पड़ा था। इस जांबाज़ अफसर की बहादुरी की कहानी किसी फ़िल्मी कहानी से कम नहीं है। 1991 में गोवा में एक दिन सोने की तस्करी की आसूचना के साथ श्री फ़र्नान्डिस को पता लगा कि मुख्यमंत्री अलेमाओ चर्चिल का भाई अल्वर्नाज़ तस्करी का सोना लेकर कार में जा रहा है, श्री फ़र्नान्डिस बिना देर किये अकेले ही मोटर साइकिल पर अल्वर्नाज़ का पीछा करने गए और अल्वर्नाज़ को पकड़ लिया, अल्वर्नाज़ ने उन पर चाक़ू का वार किया लेकिन ब्लैक बेल्ट फ़र्नान्डिस भारी पड़े और अल्वर्नाज़ गंभीर रूप से घायल होकर मारा गया वहीं फ़र्नान्डिस को भी चोटें आई। श्री फ़र्नान्डिस पर हत्या का मुकदमा चला, मुख्यमंत्री के इशारे

पर CBI ने उनके खिलाफ एक अपराधी की तरह प्रकरण दर्ज किया लेकिन फ़र्नान्डिस फौलाद की तरह डटे रहे और सुप्रीम कोर्ट तक अपना केस लड़ा। सुप्रीम कोर्ट ने कस्टम्स ऑफिसर के कर्तव्यों की सीमा शुल्क अधिनियम के तहत व्याख्या करते हुए उन्हें ससम्मान रिहा किया यह आदेश सीमा शुल्क विभाग के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुआ है। मुख्यमंत्री अलेमाओ चर्चिल तथा उसके भाइयों का तस्करी में लिप्त होना सिद्ध होने के कारण मुख्यमंत्री को अपना पद तो गंवाना पड़ा ही, COFEPOSA के प्रावधानों के अंतर्गत सलाखों के पीछे भी रहना पड़ा। श्री फ़नान्डिस को उनकी कर्त्तव्यनिष्ठा तथा बहादुरी के लिए 1996 में राष्ट्रपति पुरस्कार दिया गया।

2014 में श्री फ़र्नान्डिस अधीक्षक के पद से मुंबई में सेवानिवृत्त हुए। अभी वे फ़िटनेस ट्रेनर है और 'मास्टर्स एथलेटिक चैंपियनशिप' में भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं।

श्री एल.डी. अरोरा (1954-1993)

बैच 1977 के ऑफिसर श्री लक्ष्मण दास अरोरा ने सीमा शुल्क मुंबई (निवारक) में अपर आयुक्त के पद पर कार्य करते हुए 1986 से 1992 के बीच सोने, चांदी, मादक पदार्थों, RDX हथियारों तथा विदेशी मुद्रा के रिकार्ड प्रकरण उस समय के रु. 250 करोड से अधिक मूल्य के दर्ज किये। इस दौरान उन्होंने भारतीय सीमा शुल्क के इतिहास में सोने और मेनड्रेक्स गोलियों की सबसे बड़ी मात्रा में बरामदगी कर मादक तस्करी में लिप्त अंडरवर्ल्ड साम्राज्य को हिला दिया। 12 मार्च, 1993 में हुए मुंबई बम धमाके से सम्बंधित महत्वपूर्ण जानकारी साझा करने वे मुंबई के लिए रवाना हो रहे थे कि एक दिन पहले 24 मार्च, 1993 को इलाहाबाद में उनके घर के बाहर माफिया ने षड़यंत्र कर उनकी हत्या करा दी। उनकी हत्या में लिप्त तीन हत्यारों को आजीवन कारावास की सजा हुई।

श्री यू. राजकुमारन

श्री यू. राजकुमारन कस्टम्स विभाग में अपर डिवीज़न क्लर्क के पद पर 1964 में बम्बई में नियुक्त हुए और पदोन्नत होते हुए उपायुक्त के पद से सेवानिवृत्त हुए। इन्होंने अपने सेवाकाल में एक निहायत ही साहसी, ईमानदार तथा प्रवीण अप्रेज़र की भूमिका का निर्वहन कर बड़े कमर्शियल जालसाजी/धोखाधड़ी के प्रकरण दर्ज किये। उन्होंने बड़ी ही सहजता और बिना सहायक के अकेले ही एक-एक दिन में 12-15 घंटे जांच-पड़ताल कर जटिल प्रकरणों पर कार्य किया। उनकी सरलता और अपूर्व कार्य क्षमता से जहाँ अधिकारी इनका सम्मान करते थे वहीं कुछ लोग इन्हें अपने फायदे के लिए राह का रोड़ा मानते हुए हटाना चाहते थे। इसी क्रम में एक घटना उल्लेखित है कि एंटोप हिल स्थित सरकारी आवास में इन पर हमला करने आये भाड़े के गुंडे ने जब इनको सादगी और कम साधनों में जीवनयापन करते हुए पाया तो इन पर वार करने का इरादा बदल लौट गया।

इसी प्रकार एक अपराधी जिसके खिलाफ श्री राजकुमारन ने 120 करोड़ रुपए का प्रकरण दर्ज किया था और फलस्वरूप COFEPOSA में बंदी रहकर सजा काट चुका था, बाहर आते ही श्री राजकुमारन से मिला और अपने द्वारा उन पर जांच पड़ताल के दौरान लगाये झूठे आरोप के लिए माफी मांगी।

अपनी मेहनत और उत्कृष्ट बुद्धि कौशल से विभाग का नाम रौशन करते हुए वे विभागीय अधिकारियों के लिए मिसाल बन गए।

श्री शंभूनाथ दासगुप्ता (1935–1979)

श्री शंभू नाथ दासगुप्ता ने आई.आर.एस. के तौर पर केन्द्रीय उत्पाद व सीमा शुल्क विभाग में 1962 में गुंटूर, आन्ध्र प्रदेश में नियुक्ति दी। इसके बाद ये पूर्णिया, बिहार तथा कलकत्ता कस्टम्स हाउस में पदस्थापित होने के पश्चात कलकत्ता की डी.आर.आई. यूनिट में कार्यरत रहे। इन्होंने इस दौरान मुखबिर से सीधे ही आसूचना एकत्र कर अच्छे प्रकरण दर्ज किये और कई तस्करों को सजा दिलाई। विभाग में इनकी ईमानदारी तथा पूर्ण समर्पण के साथ कार्य करने की शैली उदाहरणीय थी। इसके अतिरिक्त ये ब्रिज टूर्नामेंट के विभिन्न स्तर तक खेलने जाते थे। ये कलेक्टर के रूप में पदोन्नत हो केन्द्रीय उत्पाद व सीमा शुल्क विभाग जयपुर में पदस्थापित हुए जहाँ स्मगलिंग सिंडीकेट के इशारे पर 7 जुलाई, 1979 को उनकी गोली मार कर हत्या कर दी गयी। उनके त्याग और कर्मठता को याद करते हुए डी.आर.आई. के फाउंडेशन दिवस पर 2017 में उन्हें 'डी.आर.आई. शहीद पदक' प्रदान किया गया। उनकी याद में केन्द्रीय उत्पाद व सीमा शुल्क विभाग जयपुर ने कई वर्षों तक बास्केटबॉल टूर्नामेंट आयोजित किये।

श्री गुलशन राय :

श्री गुलशन राय पूर्व में केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क में संयुक्त आयुक्त रह चुके हैं, ये एक शौकिया नाविक (Yachtman) रहे हैं। उन्होंने 32 फीट लम्बी नाव द्वारा अकेले ही पूरे भूमंडल का चक्कर लगाया, वे यह साहसिक कार्य करने वाले प्रथम भारतीय हैं। उनके इस साहस, उत्साह और समुद्री यात्रा के लिए कौशल हेतु विशिष्ट पदम्श्री पुरस्कार तथा अर्जुन पुरस्कार से उन्हें राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। इन्हें महाराणा रणजीत सिंह पुरस्कार भी मिल चुका है। 1988 में इंग्लैण्ड के इलीट ओसियन क्रूजिंग क्लब के एडमिरल ने उन्हें प्रतिष्ठित 'बार्टन कप' से नवाज़ा है। इन्हें भारतीय नौसेना के एडमिरल ने Yachtman-of-the-year award से सम्मानित किया है।

श्री गुलशन राय ने चार किताबें भी लिखी हैं – 'ब्रीज इन द सेल्स', 'फ्रॉम साउथम्पटन टू बॉम्बे', 'सेलिंग अराउंड द वर्ल्ड' तथा 'हिस्ट्री ऑफ़ द रॉयल बॉम्बे यॉट क्लब'।

ये विश्व प्रसिद्ध 'रॉयल बॉम्बे यॉट क्लब' के कमोडोर/अध्यक्ष रह चुके हैं।

श्री कृष्णा हरिहरन (1955–):

1990 में श्री कृष्णा हरिहरन निरीक्षक के पद पर विभाग के दिल्ली जोन में नियुक्त हुए। इससे पहले इन्होंने भारतीय एयर फोर्स में 15 वर्ष की सेवाएँ दी थी। इन्होंने 30 से ज्यादा क्रिकेट मैचों में अम्पायर की भूमिका निभायी है और ये विश्व के 5 सर्वोत्तम अम्पायरों में से एक हैं। क्रिकेट का मक्का कहलाने वाले मैदान "द लॉर्ड्स" से अम्पायरिंग की शुरुआत करने वाले श्री हरिहरन के इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (ICC) के पैनल में शामिल होने की प्रबल संभावना है। श्री हरिहरन इस विभाग में स्पोर्ट्स कोटा से नहीं बल्कि स्टाफ सिलेक्शन कमीशन द्वारा नियुक्त हुए हैं। इनके ऑटोग्राफ लेने के लिए प्रशंसकों की भीड़ लग जाती है। सचिन तेंदुलकर जैसे महान क्रिकेटर भी इनके सम्मान में खड़े हो जाते हैं, परन्तु सरल हृदय श्री हरिहरन विभाग के लिए सदैव सामान्य तथा कर्मठ अधिकारी की तरह कार्यरत रहे। एक बार उन्होंने एक इंटरव्यू में बताया कि उनके जीवन का फलसफा है कि उन्हें अपने विभाग का कार्य तथा क्रिकेट दोनों में बराबर संतुलन रखना है और उन्होंने अपने कार्यकाल में इसे बखूबी निभाया भी। ये अधीक्षक के पद से सेवानिवृत्त हुए।

18 दिसंबर, 2021 में इन्हें बीसीसीआई ने अंपायरों की तीन सदस्यीय उपसमिति में शामिल किया है।

सुश्री अंजू बॉबी जोर्ज (1977–)

सुश्री अंजू बॉबी जोर्ज का नाम कौन भारतीय नहीं जानता। इनकी बैंगलोर में प्रिवेन्टिव ऑफिसर के पद पर नियुक्ति हुई। इन्होंने भारतीय खेल जगत में इतिहास रचा जब 2003 में पेरिस में हुए वर्ल्ड चैंपियनशिप में लम्बी कूद में इन्होंने कांस्य पदक जीता। इन्होंने 6.70 मीटर (22.0 फीट) की लम्बी कूद रिकॉर्ड कर एथलेटिक्स में वर्ल्ड चैंपियनशिप में पदक जीतने वाली पहली भारतीय एथलीट का खिताब हासिल किया। 2003 में ही इन्होंने एफ्रो–एशियन खेलों में स्वर्ण पदक जीता। 2005 में इन्होंने IAAF वर्ल्ड एथलेटिक्स फाइनल में स्वर्ण पदक जीता। उन्हें इनकी उपलब्धियों के कारण 2002 में 'अर्जुन पुरस्कार', 2003 में खेलों के लिए दिए जाने वाला सर्वोच्च 'राजीव गाँधी खेल रत्न पुरस्कार' और फिर 2004 में भारत में दिया जाने वाला चौथा सर्वोच्च पुरस्कार 'पदम्श्री' से सम्मानित किया गया। इन्होंने 2004 के एथेंस ओलंपिक्स में 6.85 मीटर (22.4 फीट) का भारत का लम्बी कूद का राष्ट्रीय रिकॉर्ड स्थापित किया। मार्च, 2021 में बी.बी.सी. ने उन्हें भारत के सर्वोत्तम एथलीट के 'लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार' से सम्मानित किया। अभी वे एथलेटिक्स फेडरेशन ऑफ़ इंडिया की वाइस प्रेसिडेंट हैं।

सुश्री तान्या बेंस

सुश्री तान्या बेंस 2016 बैच की सीजीएसटी विभाग की अधिकारी हैं। वर्तमान में ये लुधियाना आयुक्तालय में कर–अपवंचना शाखा में उपायुक्त के पद पर कार्यरत हैं। इन्होने जी.एस.टी. में जालसाजी (फ्रॉड) के प्रकरण में देश में सर्वाधिक गिरफ्तारियां की हैं। इन्होंने 1599.91 करोड़ मूल्य तथा 191.94 करोड़ की कर चोरी से सम्बंधित फर्जी बिलों/ दस्तावेजों के 6 मामलों में 18 आरोपियों, जिनमें एक चार्टर्ड अकाउंटेंट भी है, को गिरफ्तार किया। इनके इस सराहनीय कार्य के लिए इन्हें केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण जी द्वारा जी.एस.टी. दिवस 2020 पर प्रशस्ति पत्र दिया गया। फर्जी दस्तावेजों के प्रकरण के अतिरिक्त इन्होंने गलत वर्गीकरण, ई–वे बिल, आयातित सिगरेटों की तस्करी तथा फर्जी इनपुट टैक्स क्रेडिट के कई मामले उजागर कर 33.26 करोड़ की कर वसूली की। इन्होने हाईकोर्ट में देश के पूर्व अटॉर्नी जनरल तथा पूर्व सोलिसिटर जनरल श्री मुकुल रोहतगी के विरुद्ध बहस की तथा इनकी केस पर मजबूत पकड़ के फलस्वरूप कोर्ट ने कर चोरी के आरोपियों को अंतरिम राहत देने से मना कर दिया।

जीएसटी के फर्जी बिल और टैक्स चोरी के एक अन्य मामले में इन्होंने 16 स्टॉफ की तलाशी टीम का नेतृत्व किया, जिसमें देर रात लुधियाना से नोएडा तक 16 घंटे लगातार सर्च की कार्यवाही की गई, इस ऑपरेशन में फर्जीवाड़े के मास्टरमाइंड को गिरफ्तार कर लिया गया। आरोपी 158 करोड़ रुपये का नकली चालान रैकेट चला रहा था। इस मामले में 2 करोड़ रुपये की वसूली भी की गई।

इस प्रतिभाशाली अधिकारी ने विभाग में जहाँ एक ओर नयी टेक्नोलॉजी का उपयोग जैसे बीफा से डाटा निकाल एनालिसिस करना, नेत्रा टूल, ई–वे बिल पोर्टल द्वारा कर चोरी के मामले पकड़े हैं वहीं कर चोरी के आरोपी को सजा दिलाने तथा सरकारी कर की वसूली सुनिश्चित करने हेतु वे सुप्रीम कोर्ट तथा हाईकोर्ट में इन मामलों की दृढ़ता से पैरवी करती हैं।

निःसंदेह विभाग के इन अधिकारियों के फ्रेरक प्रसंग हमारा मनोबल बढ़ाकर उत्कृष्ट कार्य करने हेतु हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

ऐ नौनिहालों

श्रीमती शारदा जेटली माताजी श्री दीपक जेटली, अधीक्षक, सीपीसी, जयपुर

ऐ नौनिहालों............
..................जरा सुन लो।।

जरा ध्यान से सुनो ,
सुन लो देश की पुकार,

भारत मां की गुहार,
घिरा है देश,
भ्रष्टाचारियों से,
अत्याचारियों से।

तुमने ही तो उसे उभारना है, इन जंजीरों से।
..................जरा सुन लो,
देश के नौनिहालों,
जरा सुन लो..............

देश की बेटियों और बहनों की चीत्कार,
उन पर होते अत्याचारों की पुकार
अस्मत और प्राणों की रक्षा की पुकार,
तुमने ही तो उन्हें बचाना है उनकी आबरू की रक्षा करनी है,
तुमने ही उन्हें देना है, आसरा और सहारा।
जरा सुन लो..............
जरा सुन लो..............।

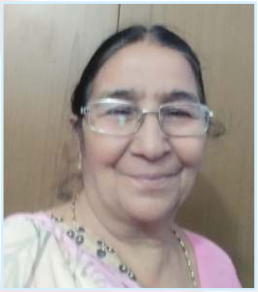

सुनाने को तो बहुत कुछ है, मगर यदि तुम,
सच्चे सपूत – सच्चे नागरिक ही बन जाओ तो बहुत है।

तुमने रक्षा करनी है,
रक्षक भाई बनकर,
एक सच्चे सपूत बनकर,
और अच्छे नागरिक बनकर।
..................जरा सुन लो।

जाओ तो बहुत है इतने में यदि कर लोगे अपने देश की रक्षा,
भारत मां की रक्षा,
अपनी बहनों की राखी का सम्मान,
बस इतना ही बहुत है।

ऐ नौनिहालों,
जरा सुन लो।
जरा सुन लो।।
..................जरा सुन लो।
..................जरा सुन लो।

जो सदा संतुष्ट है वही सदा हर्षित एवं आकषर्णपूर्ण है।

अंतरिक्ष की ओर ~~उठते~~ उड़ते भारतीय कदम

विशाल सोलंकी, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, उदयपुर

हर बात की तह तक पहुंचने एवं कारण जानने की अभिलाषा और जादू सी लगने वाली बातों का मूल स्वरूप एवं व्याख्या करने की जिद, मानव मन में सदा से रही है। जिन बातों और व्यवहार को इंसान समझ नहीं पाता, उन्हें शक्ति एवं देव मानकर पूजने लगता है और खुद को समझाता है। फिर भी उन्हें जानने और पाने की लालसा में, पुनः प्रयास करने लगता है। ऐसी ही लालसा में, जो सबसे पहले सामने प्रत्यक्ष देव या शक्ति दिखाई दी–वह थी हमारी पृथ्वी, इसका वातावरण तथा इसके आसपास मंडराने एवं दिखाई देने वाले चांद व तारे जिनमें अपना सूर्य भी एक है।

विज्ञान की कई और विभिन्न परिभाषाएं दी जा सकती हैं, किंतु संक्षेप एवं सार रूप में, किसी भी प्रकार का परिष्कृत एवं प्रमाणित ज्ञान ही विज्ञान है। सूर्य, चंद्रमा एवं अन्य खगोलीय घटनाओं का ज्ञानार्जन खगोल विज्ञान कहलाया। खगोल विज्ञान आधुनिक युग की देन नहीं वरन पुरातन काल से ही, इसका अध्ययन चल रहा है। तभी तो हमारे अति पुरातन धर्म ग्रंथो में भी इस खगोल विज्ञान संबंधी रहस्य एवं बातें लिखी मिलती हैं; चाहे वह फिर हिंदू धर्म के वराह पुराण में, गोल पृथ्वी का वराह अवतार द्वारा संभाला जाना हो अथवा अन्य धर्मों में सपाट विश्व की परिकल्पना। भारत के ऋषि मुनियों एवं योगियों ने पुरातन समय में भी कईं खगोल ज्ञान के भंडार संजोये थे; जिनके लिखित एवं चित्रित प्रमाण मौजूद हैं, हालांकि सभी के काल क्रम की पुष्टि नहीं की जा सकती।

विश्व के सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद के 'वेदांग ज्योतिष' में खगोलीय रोशनी हों, यजुर्वेद में खगोल विज्ञान हों अथवा ऐसे ही उपनिषद स्मृतियों एवं पुराणों में, इसका एवं संबंधित कथाओं का उल्लेख मिलता है; जिनकी अनुमानित आयु कम से कम 5000 से 6000 वर्ष है।

इनमें सौर वर्ष की अवधि का 365 दिन होना, चंद्रमा का चक्कर 28 दिन का होना, पृथ्वी का गोल होना तथा नक्षत्रों से ज्योतिषीय गणनाएं इत्यादि का वर्णन है। साथ ही भारतीय वैदिक कैलेंडर भी चंद्र आधारित है तथा दिवस का प्रारंभ एवं समापन, सूर्योदय एवं सूर्यास्त पर आधारित है। हमारे यहां जंतर मंतर के नाम से पुरातन वेधशालाएं भी स्थित हैं, जो प्रमाण हैं कि खगोल विज्ञान सदा मानव को आकर्षित करता रहा है।

6000 से 7000 वर्ष पूर्व घटित रामायण तथा 4000 से 5000 वर्ष पूर्व घटित महाभारत में भी ग्रहण की सटीक स्थिति का उल्लेख है। हालांकि समय काल के बारे में कई मतभेद हैं परंतु विभिन्न काल, परिस्थितियों, राजनीतिक एवं भौगोलिक कारणों इत्यादि की वजह से, वह ज्ञान संचित नहीं रह सका तथा भारत को विश्व में अपने ज्ञान का लोहा मनवाने के लिए स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पुनः अपने कदम पूर्ण दृढ़ता, विद्वता एवं लगन से बढ़ाने पड़े।

भारतीय भागीरथी प्रयासों के फलस्वरूप भारत फिर से विश्व पटल पर एक सितारा बनकर उभरा है तथा भारत को 'सपेरों का देश' कहने वाले सभी विदेशी हमारी ओर हसरत, विश्वास और उम्मीद भरी नजरों से सम्मान पूर्वक देखने लगे हैं। हाल के कुछ वर्षों में भारत की खगोल विज्ञान या अंतरिक्ष विज्ञान में मिली सफलताओं ने तो सभी की आंखें दंग कर डाली हैं।

वो जो भारत के रॉकेट घोर अँधेरे को चीरते हुए, अंतरिक्ष में तिरंगा फहराया रहे हैं, उन्होंने पूरे विश्व के उन देशों को आश्चर्यचकित कर दिया है, जो कभी स्वगर्वित हुए बैठे थे। अब भारतीय आकाश में खींची प्रकाश एवं सफेद धुएं की सुनहरी धवल लकीर ने, भारतीय ज्ञान की उज्जवलता से सबको विस्मित किया हुआ हैं।

चंद्रविजय (23.08.2023) के कुछ दिनों में ही आदित्य (सूर्य) (02.09.2023) के आलोकित पथ पर बढ़ जाना, किसी अचंभे से कम नहीं है। यह सब सिर्फ चंद दिनों के परिश्रम का नहीं, वरन वर्षों की लगन एवं इच्छा शक्ति

का परिणाम है कि हमारे प्रिय प्रधानमंत्री जी ने चंद्र विजय के बधाई संदेश में हीं; अगली कई अंतरिक्ष परियोजनाओं जिनमें सूर्य, शुक्र, बृहस्पति आदि ग्रहों के सम्बन्ध में अध्ययन एवं प्रक्षेपण की घोषणा कर दी है। चंद्र विजय की खुमारी उतरने से पूर्व ही आदित्य मिशन लांच कर दिया गया है, जिसमे कृत्रिम उपग्रह 125 दिन चलकर, पृथ्वी से 15 लाख किलोमीटर की दूरी पर स्थित L1 कक्षा (जहां पृथ्वी एवं सूर्य के गुरुत्वाकर्षण बल बराबर होते हैं) पर पहुंचकर सूर्य से संबंधित अध्ययन करेगा।

इसरो (ISRO) ने साथी देशों के सहयोग से अंतरिक्ष की ओर, जो छोटे-छोटे कदम बढ़ाए थे; उन कदमों को स्वदेशी छलांग बनाते हुए जो कीर्तिमान स्थापित किए हैं उनसे पूरा विश्व दंग है। गरीब देश की विश्व-धारणा से ऊपर उठकर, अंतरिक्ष की सस्ती उड़ान और सफलतम शक्ति होने का साहस एवं परचम सभी भारतीयों को गर्वित कर देता है। यह जो आज गर्व का एहसास दे रहा है, वह कभी विदेशी मुद्रा भी अर्जित करेगा, इसमें संदेह नहीं है। जैसे इजरायल, अमेरिका, रूस एवं फ्रांस जैसे देश विश्व में हथियारों के जखीरा भेज एवं बेच रहे हैं; भारत भी एक दिन विश्व को सबसे सस्ती अंतरिक्ष सेवाएं देगा, जो अभी उन तीन विकसित देशों हेतु भी संभव नहीं, जिन्होंने अंतरिक्ष विज्ञान में बड़ी सफलताएं अर्जित की हैं।

जहां हाल ही में रूस जैसी प्रोद्योगिकी के 2100 करोड़ रुपए, उसी जगह चंद्र-रज में ध्वस्त हुए हैं; वहीं भारत ने सिर्फ 615 करोड़ में, विश्व में प्रथम बार चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग कर इतिहास रचा है। यह भारत की विश्व पटल पर अपनी मजबूत दस्तक है।

भारत के सबसे अच्छे विश्वविद्यालय एवं इंस्टीट्यूट से निकले विद्यार्थी जहां विदेशों में विश्वस्तरीय अंतरिक्ष क्षेत्र, सॉफ्टवेयर एवं अन्य संस्थाओं की शोभा बढ़ा रहे हैं; वहीं दूसरी और भारत के भविष्य को निखारने हेतु आगे बढ़े इसरो के विज्ञानी इस धरा को गौरवान्वित कर रहे हैं।

हमारी अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी जल्द ही हमारे देश एवं अन्य देशों को मौसम की जानकारी, जीपीएस, इंटरनेट, सुरक्षा व्यवस्था, वातावरण के विभिन परिवर्तनों, कनेक्टिविटी एवं अन्य टेक्नोलॉजी हेतु, सस्ती सफल शांतिकालीन सेवाएं देने में सबसे अग्रणी साबित होगी इसमें अब ज्यादा देर नहीं है जो 1963 के प्रथम रॉकेट प्रक्षेपण से सिर्फ 60 वर्षों में किए गए सफल चंद्रयान मिशन से भी सिद्ध होता है।

1975 में अपना प्रथम कृत्रिम उपग्रह आर्यभट्ट जो सिर्फ 5 दिन सक्रिय रहा और लौट के आया से; 1980 के तृतीय एवं प्रथम पूर्ण स्वदेशी कृत्रिम उपग्रह रोहिणी और फिर पीएसएलवी, जीएसएलवी से; 2019 में 20 सेटेलाइट और फिर 2017 के विश्व रिकॉर्ड 104 कृत्रिम उपग्रह (101 अंतरराष्ट्रीय+3 राष्ट्रीय) का सफल प्रक्षेपण इसरो के वैज्ञानिकों की मेहनत लगन एवं ज्ञान का परिणाम एवं परिचायक है।

ऐसे में वर्ष 2016-2017 एवं 2023 की उपलब्धियां तो अविस्मरणीय हो गई हैं। 2016 में जहाँ 20 कृत्रिम उपग्रहों का एक साथ प्रक्षेपण, स्क्रैमजेट इंजन एवं स्वदेशी क्रायोजेनिक इंजन का सफल प्रक्षेपण हुआ; वहीं इस वर्ष रियूजेबल स्पेसशटल (पुनःउपयोगी अंतरिक्ष शटल) का भी सफल परीक्षण हुआ; तो वर्ष 2023 में चंद्रयान 3 की चंद्रमा पर सफल सॉफ्ट लैंडिंग तथा सूर्य के अध्ययन हेतु आदित्य मिशन का प्रक्षेपण हुआ। 2017 के पीएसएलवी पर चढ़कर हुई 104 कृत्रिम उपग्रहों के प्रक्षेपण ने तो विश्व को विमूढ़ कर दिया क्योंकि इससे पूर्व केवल 37 कृत्रिम उपग्रहों के लॉन्च के साथ यह रिकॉर्ड रूस के पास था ।

जहां चंद्रयान प्रथम ने अल्प सफलता के बाद भी विश्व को चंद्रमा पर जल अथवा बर्फ होने की सटीक पुष्टि की, वहीं चंद्रयान तृतीय ने चंद्रयान-2 के लांच के, सिर्फ 4 वर्षों में, चंद्रमा पर सफल सॉफ्ट लैंडिंग कर अन्य देशों को आइना दिखा दिया। यह इसलिए भी अद्भुत था क्योंकि जो अन्य देश 2000 करोड़ से ज्यादा का खर्च करके भी ना कर सके, वह हमने उसके एक तिहाई, एक चौथाई कीमत में सफलता से कर दिखाया। श्रीहरिकोटा के सतीश धवन स्पेस सेंटर से चलकर, चंद्रयान 3 का सफर धीमा (41 दिन) किंतु सफल रहा और 14 पृथ्वी दिवस जो कि एक चंद्र दिवस के बराबर होते हैं, में सौर ऊर्जा से चालित होकर, विक्रम लैंडर से निकलकर, सिर्फ 26 किलोग्राम के प्रज्ञान रोवर द्वारा चंद्र सतह

तथा चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण बल, चंद्र भूकंप का अध्ययन, वहां जीवन की संभावना तथा वहां के वातावरण संबंधी अन्य काफी जानकारियां जुटाने वाला रहेगा।

हमारे वैज्ञानिकों का यह अभिनंदन भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रमों के जनक डॉक्टर विक्रम साराभाई, अंतरिक्ष यात्रियों श्री राकेश शर्मा, सुश्री कल्पना चावला, सुश्री सुनीता विलियम्स एवं उपग्रह प्रक्षेपण की तकनीक विकसित करने वाले श्री एपीजे अब्दुल कलाम के वंदन तथा इसरो के श्री शिवम एवं श्री सोमनाथ के प्रयासों के स्मरण के बिना पूरा नहीं हो सकता; जिनके अथक प्रयासों ने संपूर्ण भारतवासियों का मस्तक गर्व से ऊंचा कर दिया है। वैज्ञानिकों के प्रोत्साहन के लिए भारतीय सरकार ने भारतीय मानव अंतरिक्ष मिशन हेतु 12400 करोड रुपए की घोषणा की है। साथ ही स्पेस कैप्सूल रिकवरी एक्सपेरिमेंट अर्थात कृत्रिम उपग्रह को पृथ्वी पर पुनः उतारने की तकनीक का विकास, वीनस (शुक्र), जुपिटर (बृहस्पति), क्षुद्रग्रहों व धूमकेतु पर अन्वेषण की महत्वाकांक्षी योजनाएं भी प्रस्तावित है।

सस्ती सैटेलाइट प्रक्षेपण प्रोग्राम एवं उच्च सफलता दर से अभिभूत भारत ने नए अंतरिक्ष संघ ईस्पा (ISPA) तथा कुछ अन्य संगठनों की नींव भी रखी है जो इस क्षेत्र में भविष्य हेतु विदेशी तथा गैर सरकारी निवेश द्वारा पर्याप्त मुद्रापार्जन एवं आगामी अंतरिक्ष कार्यक्रमों हेतु निवेश की व्यवस्था के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे। हमारी परियोजनाएं उन सभी विकासशील देशों के लिए भी वरदान सिद्ध होगी जिनके पास न स्वयं की उन्नत अंतरिक्षीय प्रौद्योगिकी है और ना ही आवश्यक सेवाओं हेतु वित्तीय व्यवस्था जैसे मौसमी जानकारियां, शिक्षा, वन संरक्षण, कृषि विज्ञान, भूजल एवं मृदा की पहचान, भौगोलिक सर्वे तथा नवीन खनिज संपदा की खोज। यह प्रौद्योगिकी भारतीय अर्थव्यवस्था हेतु राजस्व के नए द्वार खोलेगी।

आशा है निकट भविष्य में भारत अपनी इन सभी महत्वाकांक्षी परियोजनाओं में सफलता प्राप्त कर विश्व के अग्रणी देशो का सिरमौर बनेगा तथा भारतीय विकास कथा का यह सफर अनवरत चलता रहेगा और हमारा देश भारत फिर विश्व गुरु के सम्मान को प्राप्त करेगा।

अभी चाँद पर पहुंचे हैं हम,
अब बस्ती वहां बसानी है,
ब्रह्माण्ड की हम सैर करेंगे,
अब ये बात नहीं बेमानी है।

आकाश की कोई सीमा नहीं,
तो सीमा हमको बढानी है,
नहीं कोई भारत से बढ़कर,
पूरे विश्व से ये बात मनवानी है।।

जीवन में पहली सफलता के बाद रूके नहीं, क्योंकि यदि आप दूसरे प्रयास में असफल हो गए तो लोग कहेंगे कि आपकी पहली सफलता भाग्य की वजह से मिली हैं।

जब बुद्ध लौटे

विवेक श्रीवास्तव, सहायक आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जयपुर

लिखी थी पाती तुम्हें
एक बार कुंठित होकर
नहीं भेज पाई पर
कुछ लज्जावश,
कुछ क्रोधवश
पर देखा जो मुख तुम्हारा
लौटे थे तुम जब
करके प्राप्त ज्ञान
तब आभा तुम्हारे मुख की
देख कर हुआ मन म्लान
ढूँढने लगी वो पाती,
लिखी थी तुम्हें जो
हुई आत्मसंतुष्टि
कि अच्छा हुआ
जो नहीं भेजी थी
तुम्हें वो
कहीं हो जाते तुम जो
विचलित, मेरे रुदन से
तो रह जाती मानव-जाति
बिना परित्राण के
कहते हैं लोग कि
नहीं बाँध पाई तुम्हें मैं
कसते हैं ताने वो लोग भी
जो हैं हमारे अपने
निकालते हैं कमियाँ
मेरे रूप की, गुणों की
उड़ाते हैं हँसी
हमारी समीपता की,
राहुल के जन्मने की
वर्षों से सुनते रहने के बाद
वही बातें दिन-रात
पक चुकी हूँ मैं भी
नहीं रही अब पहले जैसी
नहीं लगाती अब
आँखों में सुरमा
नहीं सँवारती
अधिक देर तक
अब मेरे लंबे केश भी
सोचती हूँ
तुम्हारे इतने बड़े प्रयोजन में
दे सकूँ कुछ योगदान मैं भी
दूर रह कर तुमसे
छोड़ कर सारी अपेक्षाएं,
कर के बलिदान
सभी इच्छाएं
करके मुक्त तुम्हें
घर के दायित्वों से
कर के सीमित स्वयं को
पालन में राहुल के
कर रही हूँ, पालन
पत्नी धर्म का
ताकि
कर सको तुम,
अन्वेषण ज्ञान का
और
दे सको मार्ग
भटके मानव
को
दुख से मुक्ति
का ।

अब समझ पाती हूँ
कि
तुम्हारी सोच थी विस्तृत
नहीं थी परिवार तक सीमित
तुम थे ऊपर, कहीं ऊपर
सभी के लिए
तुम्हारा मन था विचलित
सम्पूर्ण वसुधा के कष्ट थे
थे तुम्हारी सोच का हिस्सा
तुम्हारे गृहत्याग का निर्णय भी
अचानक से लिया हुआ नहीं लगता
पर मेरी सोच में तो थे
केवल तुम और मेरा बच्चा
होती थी विरक्ति
मुझे भी कभी-कभी
और होती थी
उपेक्षा से तुम्हारी,
कुंठा भी
फिर समझाती थी अपने को
कि हूँ मैं स्त्री,
उस पुरुष की

है परवाह जिसे,
सकल जगत कल्याण की
और
लगा कर राहुल को गले
निभाती थी भूमिका
माँ और पिता दोनों की
आज देख कर तुम्हें
ज्ञानी रूप में
लगता है संभवतः
दे पाई हूँ
कुछ योगदान मैं,
तुम्हारे पुनीत प्रयोजन में।
लेते है तुम्हारे साथ
लोग नाम मेरा भी,
जानते हैं मुझे
तुम्हारी पत्नी के
रूप में ही
नहीं हुआ समाप्त ये संबंध
तुम्हारे गृहत्याग के बाद भी
है संबंध हमारा
जन्म-जन्मांतर का
जैसे होता है संबंध
शरीर और आत्मा का
और करूँगी प्रार्थना मैं
कि पति रूप में
तुम ही मिलो
हर जन्म में

यादें

नीता शुक्ला, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर

निश्चित तिथि तो स्मरण नहीं, परंतु हमारे स्वर्गीय परमपूज्य दादा जी को पितृ दिवस के ही दिन आदरणीय चाचा जी ने द्विचक्रवाहिनी उपहार स्वरूप प्रदान की थी।

दादा जी को बहुत समझाया कि यह द्विचक्रवाहिनी चलाने पर आपकी अशक्त चक्षु पर बहुत जोर पड़ेगा, परंतु उन्होंने एक न सुनी और अपनी ही पसंद की एवन निर्मित स्याह वर्ण की 24 इंच की द्विचक्रवाहिनी को ही क्रय करने पर जोर दिया, स्थान भी बताया कि कहां से क्रय करना है।

चाचा जी और मेरा भाई उन के बताए हुए स्थान डिप्टीगंज नामक बाजार गए और उनके द्वारा कथित सभी मानकों तथा विनिर्देशों को ध्यान में रखकर द्विचक्रवाहिनी क्रय कर लिया।

क्रय तो कर लिया था परंतु अब सबसे ज्यादा बड़ी चुनौती थी कि वह साइकिल गांव (मेरा गांव उत्तर प्रदेश के जिला बुलंदशर में स्थित है) कैसे पहुंचाई जाए।

बुलंदशहर से जहांगीराबाद तक तो चाचा जी उसको शटचक्र मोटरवाहिनी की छत पर रख कर लाए तथा तत्पश्चात स्वयं चला कर गांव तक ले के आए। गांव पहुंचकर दादा जी ने उसका पूर्ण निरीक्षण एवं मूल्यांकन करने के बाद, यही नहीं उसकी असली कीमत जानने के बाद ही उसको स्वीकार किया और भी बहुत कुछ वाद विवाद हुआ चाचाजी और दादाजी के बीच में, परंतु बाद में उनके चेहरे की प्रसन्नता कि मेरे पुत्र ने मुझे द्विचक्रवाहिनी दिलवाई है, असीम थी।

उस समय हम अवगत नहीं थे कि आज पितृ दिवस है, परंतु एक दो दिवस बाद ही पंजाब केसरी नामक समाचार पत्र में मैंने पढ़ा कि जून माह का तृतीय रविवार पितृ दिवस के रूप में मनाया जाता है।

यह वाकया काफी पुराना है, परंतु आज भी मेरे हृदय में वैसे के वैसे ही सजीव है, जो उनके चेहरे पर खुशी की सलवटें थीं वो आज भी यूं ही मेरे हृदय में एक मध्यम सा संगीत छेड़ जाती हैं।

आज दादाजी इस दुनिया में नहीं हैं लेकिन पूज्य दादा जी के जीवन का एक एक वाकया यादगार है, और उनके साथ बिताया हर एक पल याद करके गला भर देता है, चक्षुओं से अश्रुधार बहने लगती है और धीमी सी मुस्कान भी दे जाती है।

रोचक संस्मरण

हमेशा अपने आपको स्टूडेंट ही समझें और सीखने के लिए तैयार रहें

संजीव सिंघल, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

बात 1986 की है जब मैंने बी.एस.सी. करने के बाद राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के एक साल के पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन प्रोजेक्ट, प्लानिंग एंड इंफ्रास्ट्रक्चर मैनेजमेंट के कोर्स में एडमिशन लिया। कोर्स के प्रथम दिन, कोर्स डायरेक्टर महोदय ने अपना परिचय देने के बाद एक-एक करके हम सभी विद्यार्थियों से अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर हमारा परिचय लेने के बाद कहा कि आप में और मुझ में सिर्फ इतना सा फर्क़ है कि आप जूनियर स्टूडेंट हो और मैं सीनियर स्टूडेंट हूँ।

कोर्स डायरेक्टर महोदय की यह बात मुझे और कुछ अन्य विद्यर्थियों को हज़म नहीं हुई। सवाल पूछने के इरादे से हमने अपना एक हाथ ऊपर उठाया। मैं आगे वाली पंक्ति में ही बैठा हुआ था, लिहाज़ा कोर्स डायरेक्टर महोदय ने सबसे पहले मुझे उठ कर अपना सवाल पूछने का इशारा किया। मैंने उनसे कहा कि सर हम तो अभी ग्रेजुएशन करके आये हैं और 19-20 साल के ही हैं जबकि आप तो अपीयरेंस से रिटायर्ड प्रोफ़ेसर लग रहे हैं और आपकी उम्र भी 65-70 साल के आसपास लग रही है, फ़िर आपका अपने आप को स्टूडेंट कहना समझ नहीं आ रहा है।

कोर्स डायरेक्टर महोदय ने मुझे बैठने का इशारा किया और मुस्कुराते हुए बोले कि आपका अनुमान सही है, मैं रिटायर्ड प्रोफ़ेसर हूँ। लेकिन मैं अपने आपको स्टूडेंट ही समझता हूँ क्योंकि मेरा मानना है कि सीखने की कोई उम्र नहीं होती है और इंसान सीखने की इच्छा रखता है तो प्रतिदिन कुछ न कुछ नया सीख सकता है। यह जरूरी नहीं कि इंसान सिर्फ़ अपने से बड़ों से ही सीखे, बल्कि अपने से छोटों से भी बहुत कुछ सीखा जा सकता है। उन्होंने आगे बताया कि उन्होंने स्कूल में पढ़ने वाले अपने पोते से कंप्यूटर चलाना सीखा है। अब यदि वो ये सोच लेते कि मैं तो ग्रांड फादर हूँ और प्रोफ़ेसर हूँ, मैं तो सब जानता हूँ तो कभी भी अपने पोते से कंप्यूटर चलाना नहीं सीख सकते थे। वो इसलिए सीख पाए क्योंकि उन्होंने अपने आपको स्टूडेंट माना और सीखने के लिए तैयार रहे।

हमने देखा है कि जब मोबाइल या कंप्यूटर में हम कहीं पर अटक जाते हैं तो हमारे बच्चे उस प्रॉब्लम को चुटकी में ठीक कर देते हैं।

उस पहले ही दिन कोर्स डायरेक्टर महोदय ने एक सीख और दी - ONCE A STEP IS TAKEN, IT CAN NOT BE REVERTED. IF REVERTED, IT GIVES VERY HEAVY LOSS TO THE ENTREPRENEUR अर्थात हमें कुछ भी करने से पहले बहुत सोच विचार करके ही आगे बढ़ना चाहिए अन्यथा नुकसान बहुत बड़ा भी हो सकता है।

उस एक ही दिन मुझे जिंदगी की दो बहुत बड़ी सीख मिलीं, जिनका फ़ायदा कई बार मैंने दिल कि गहराई से महसूस किया है। ये दोनों सीख जिंदगी भर मेरे साथ रहेंगी और मैं तहेदिल से उन रिटायर्ड प्रोफेसर साहब का शुक्रिया अदा करता हूँ।

मंजिल

उत्साहपूर्ण जीवन

अरविन्द कुमार शर्मा, अधीक्षक (मुख्यालय), केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जयपुर

हमारी मंजिल अभी दूर है
पर इसमें पड़ाव भी बहुत हैं
अफ़साने भी बहुत हैं
यहां छोटी सी इस जिंदगी में
इम्तिहान भी बहुत हैं
इन इम्तिहानों से डरो मत
दुखी क्यों होते हो
पुरुषार्थ करते चलो
इम्तिहानों के पड़ावों को
पास करते चलो बढ़ते चलो
खुशियां मनाते चलो
खुशियों के बहाने हैं बहुत
स्वस्थ रहो मस्त रहो
निरोग रहो चुस्त रहो
ज्ञान ज्योति को बढ़ाते चलो
सभी को खुशियां बांटते चलो
पुरुषार्थ करते चलो आगे बढ़ते चलो
हमारी यात्रा तो लंबी है
हमारी मंजिल अभी दूर है
निरर्थक तनावों से छुटकारा पाइये
उदासी के पलों से खुद को बचाइये
जरा मुस्कराइये,
जरा मुस्कुराइये
स्वस्थ रहो
मस्त रहो
व्यस्त रहो
मुस्कुराते रहो

जीवन में सदा नवीन कार्य करने का
उत्साह उमंग कायम रहना चाहिए।

उम्र बढ़ने से शारीरिक क्षमता कम हो
तो हो

मन सदा उत्साहित रखना चाहिए

हम जीवन में कभी भी निराश

हताश व निरुत्साहित ना हो।

हम मन से सदा युवा बने रहे

हमें जो करना था कर लिया

यह सोच हम निष्क्रिय न हो

मृत्यु तो अटल सत्य है।

पर निष्क्रिय आश्रित हो जाना तो

दु:खों को स्वयं निमंत्रण देना ही है

उम्र बढ़ने से नहीं

विचारों से मानव बूढ़ा होता है।

मुसीबतों का सामना करते चलो

हंसते रहो मुस्कुराते रहो

खेलते रहो दौड़ते रहो

सदा जिंदा दिल के साथ रहो।

बुझे दीपक और बुझे दिल की

कभी कोई कद्र नहीं करता।

हमारा जीवन सदा उमंग से भरा रहे

हमारा जीवन सदा उत्साहपूर्ण रहे।

वो कुत्ता-ए-आजम

दीपक पंजाबी, सेवानिवृत्त अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर

शुक्रवार को 4-5 दिन बाद घर पहुंचा और माँ के पास हालचाल जानने के लिए बैठा। माताजी ने दो तकलीफें बताई - एक तो कमर में दर्द है और दूसरा ये कि एक कुत्ता रोज घर के बाहर गंदगी कर जाता है। पहली तो आर्डिनरी थी, दूसरी ध्यान देने लायक लगी। हुआ यूँ की घर के बाहर चारों तरफ तो पक्का करा रखा है, लेकिन दो अशोक के पेड़ों के आसपास कच्ची मिट्टी छोड़ रखी है। एक कुत्ता यहाँ-वहां से हड्डी या गंदगी उठा कर लाता और उसके पेड़ के नीचे सूखे पत्तों-मिट्टी में दबा देता। हवा से मिट्टी उड़ती और गंदगी बाहर आती और सुबह-सुबह मंदिर जाने के लिए निकलती मम्मी का हड्डी देख कर दिमाग खराब होना स्वाभाविक था।

अगले दिन सुबह-सुबह मैं टेरेस पर कुर्सी लगा कर अखबार पढ़ रहा था तभी एक गबरू-सा भूरा कुत्ता मुंह में एक मरा पंछी दबाए पूँछ उठा कर आता दिखाई दिया। मुझे शक हुआ कि हो ना हो, यही वो वांटेड कुत्ता है।

कुत्ते ने सीधा आकर अशोक के पेड़ के नीचे मरे पंछी को रखा और पंजों से पत्ते हटाने लगा। मैं तुरंत कुर्सी से उठा, गमले में से एक मोटा-सा गोल पत्थर उठाया और चुपचाप सीढ़ियों से उतर कर नीचे आया। घर का गेट खोल कर पत्थर पीछे छुपाये हुए बाहर निकला। कुत्ता अपने काम में व्यस्त था लेकिन उसे कुछ गड़बड़ का आभास हो गया। वो पंछी को वही रख कर मेरी ओर देखते उलटे पैर पीछे हटने लगा। इतनी देर में मैंने अपनी पत्थर वाली बाँह तान दी, कुत्ते ने वस्तुस्थिति को समझते हुए मेरे एक्शन में करने वाले रिएक्शन के लिए पोजीशन ले ली। मैं अपनी बाँह ताने हुए और कुत्ता मेरी आँखों में आँखे डाल कर अपने दोनों पंजे नीचे टिकाये, कान खड़े किये - जैसे दुनिया रुक सी गई। मैंने सोचा आज ये कुत्ता गया - लेकिन मुझे नहीं मालूम था कि ये कुत्ता बड़ा ही कुत्ता है।

मेरी मति मारी गई और मैंने अपनी पूरी शक्ति से पत्थर दे मारा। जैसे सचिन तेंदुलकर बाउंसर को डक करता है - ठीक वैसे ही कुत्ते ने 'प्रोफेशनली' मेरे मारे हुए पत्थर को डक कर दिया। पत्थर जाकर सीधा हमारे सामने वाले गुप्ता जी की गाड़ी पर लगा। कार के सेंट्रल लॉकिंग की चाऊं-माऊं चाऊं-माऊं की आवाज़ से पूरी गली गूँज गई। मैं अपनी जगह सुन्न सा खड़ा था - किंकर्तव्यविमूढ़ - पहली बार ज़िंदगी में किसी कुत्ते को ताली मार के हँसते देख रहा था।

कुछ क्षण में मेरे सेंसेस वापस आये तो मुझे कुछ नहीं सूझा - सीधा घर के अंदर भागा और बॉउंड्री वाल के पीछे छुप गया - कुर्सी पर बैठ कर फेंसिंग में से बाहर देखने लगा। गुप्तानी जी आगे-आगे और गुप्ता जी पीछे-पीछे दौड़ते बाहर आये। गुप्ता जी बोले गाड़ी को शायद किसी ने छेड़ा है। मैडम बोली अरे नहीं मैंने धम्म की आवाज़ सुनी थी। अच्छा देखता हूँ, कहकर गुप्ता जी गाड़ी का पूरा राउंड लेने लगे। जैसे ही उन्होंने डेंट और नीचे पड़ा पत्थर देखा मुंह से निकला अरे यार। मैडम पीछे पीछे आई और डेंट देखते ही बोली हाय हाय, ये किसने कर दिया। उनके हाथ अदृश्य रूप से छाती कूट रहे थे। कुत्ता अपना काम करके गायब हो चुका था। थोड़ी देर तक बाहर ही शोक मनाने के बाद दोनों मियाँ-बीवी अंदर चले गए। मैंने सोचा चलो कहानी खत्म हुई।

थोड़ी देर बाद मैं वर्क-आउट जाने के लिए गाड़ी में बैठने लगा तो गुप्ता जी निकल के मेरी तरफ आये। मैंने सोचा आज तो गए काम से। बोले यार दीपकजी आपसे बात करनी है। मैं धड़कते दिल से बोला हाँ हाँ बोलिए।

बोले यार ये अपनी गली में आगे की तरफ जो स्टूडेंट रहने आये हैं, बहुत ही घटिया लोग हैं।

क्यों क्या हुआ मैंने पूछा।

बोले अपनी गली से इतनी तेज मोटर साइकिल लेकर निकलते हैं कल मैंने थोड़ा सा टोक दिया तो साले, जलील टाइप के लोग, मेरी गाड़ी पर आज पत्थर

मार गए। अभी धनतेरस पर ही तो नयी ली थी। साथ ही प्रत्यय के रूप में कुछ गालियां भी जोड़ी जो गैर संसदीय ही नहीं, गैर नगर निगम भी थी।

मैंने डैमेज कण्ट्रोल करने की कोशिश की... हद है भाईसाहब घटियापन की, लेकिन आप किसी को गाली देकर क्यों अपना मुह खराब करते हो। कहकर जल्दी से भाग छूटा।

अगले दिन सुबह फिर से जब टेरेस पर कुर्सी लगा के अखबार पढ़ रहा था तो फिर वही कुत्ता मुंह में कुछ दबाये हुए आता दिखा। मैंने तुरंत अपनी कुर्सी पीछे खींच ली। कहीं नज़र ना मिल जाए। लेकिन कुत्ता भी कमाल था, मुंह में दबाया माल पेड़ के नीचे रखा और मकान के नीचे से ऊपर तक नज़र दौड़ाई। शायद मुझे ही ढूंढ रहा था। लेकिन भाई अपना मानमर्दन हो चुका था।

अब आत्मग्लानि से त्रस्त हूँ, एक तरफ तो एक कुत्ते ने द्वन्द युद्ध में जमीन सूंघा दी, दूसरा पडोसी की गाड़ी ठोक के गालियां और सुन ली। गुणीजनों से निवेदन की कोई ज्ञानवाणी सुना कर खोये आत्मविश्वास को पाने में मदद करें।

❑❑

समय और शिक्षा

पदमाराम, कर सहायक, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर अपील आयुक्तालय, जोधपुर

समय और जिंदगी, दुनिया के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।
जिंदगी, समय का सदुपयोग सिखाती है।
समय हमें जिंदगी की कीमत सिखाता है।
मुस्कुरा कर देखने, और देख कर मुस्कुराने में बडा फर्क है,
नतीजे बदल जाते है और कभी-कभी रिश्ते भी..!
''सिद्धांतों'' पर जीना सबसे बेहतर है।
इंसान के अंदर जो समा जाये वो ''स्वाभिमान'' और
इंसान के बाहर छलक जाये वो ''अभिमान''!!
संपन्नता मन की अच्छी होती है, धन की नहीं... क्योकि?
धन की संपन्नता अहंकार देती है और मन की संपन्नता संस्कार!
''अंहकार'' दूसरों को झुकाने में आनंदित होता है और..
''संस्कार'' खुद झुकने में आनंदित होता है।
कुछ लोग ''जिंदगी'' होते है, कुछ लोग ''जिंदगी'' में होते है,
कुछ लोगों से ''जिंदगी'' होती है, पर कुछ लोग होते हैं तो ''जिंदगी'' होती है।।
''यादों के पन्नो'' से भरी है ''जिंदगी'', सुख और दु:ख की पहेली है ''जिंदगी''
कभी अकेले बैठ कर सोच कर तो देखा।
संबंधों के बगैर अधूरी है, जिंदगी।

दिवाली : बचपन वाली

गुलाब चन्द मीना, सहायक आयुक्त, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

पहले गांव वाले केवल होली-दिवाली ही मनाते थे, पर बाद में बढ़ते बाजारवाद के कारण नए-नए वार-त्यौहार भी मनाने लग गए। चालाक लोग अपने-अपने नफ़ा-नुकसान देखते हुए इनके पीछे अलग-अलग संदर्भ गढ़ते चले गए। हां, पहले वार-त्यौहार काश्तकार को केंद्र में रखकर ही मनाए जाते थे, पर अब तो इन तीज-त्यौहारों के आधार पर ही अपनी अपनी अस्मिता को आंकने लगे हैं। अब तो तीज-त्यौहारों की भरमार सी हो गई है और हां, आज इनका प्रचार-प्रसार भी खूब होने लगा है। दीपावली के पीछे की कथाओं को जरा आगे बढ़ाते हैं-

कहते हैं, समुद्र मन्थन के दौरान कार्तिक अमावस्या को मां लक्ष्मी क्षीर सागर से अवतरित हुई थीं। संभवत: इस प्रतीकात्मक मन गढ़न्त घटना के बाद से ही ज्योति पर्व पर लक्ष्मी की पूजा आरम्भ हुई।

पौराणिक कथाओं के अनुसार महा दानव राजा बाली तीनों लोगों का मालिक बनना चाहता था, इसीलिए उसने लक्ष्मी को अपने कब्जे में कर लिया। तब विष्णु ने अपने 'वामन' अवतार में लक्ष्मी को बाली के चंगुल से मुक्त करवाया था, तब से लक्ष्मी पूजन आरम्भ हुआ।

दीपावली के एक दिन पहले नरक-चौदस मनाई जाती है, नरकासुर प्रदोषपुरम् में राज करता था। उसकी जेल में कोई 16000 औरतों को बन्दी बना रखा था। विष्णु के आठवें अवतार 'कृष्ण' ने नरकासुर को मारकर उन महिलाओं को मुक्त करवाया। माना जाता है कि इन मुक्त हुई महिलाओं ने कृष्ण को अपना स्वामी मान लिया था। संभवतः इसीलिए माना जाता है कि कृष्ण के कोई 16108 रानियां थीं, उनमें आठ तो पटरानियां थीं, बाकी की गणना चालाक लोग इसी तरह करते रहते हैं। अब प्रबुद्ध पाठक ही इस पर कुछ प्रकाश डाल सकते हैं।

महाभारत के अनुसार निष्कासन की लम्बी अवधि के बाद कार्तिक अमावस्या को पाण्डव अपने राज्य में लौटे थे, इसी खुशी में दीप जलाए गए थे।

राजा विक्रमादित्य का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था।

525 ईसवी पूर्व महावीर के निर्वाण दिवस पर अन्तिम शिक्षाओं के लिए एकत्रित हुए अट्ठारह राजाओं ने पहली बार दिवाली मनाई थी, इसलिए जैन समाज भी इसे अपने पर्व के रूप में मनाता है।

दीपावली के दिन गौतम बुद्ध बुद्धत्व प्राप्ति के बाद पहली बार अपने नगर लौटे थे, इसलिए बौद्ध धर्म के अनुयायी इस दिन दीप जलाते हैं। बुद्ध का अन्तिम संदेश भी 'अप्प दीपो भव' ही था।

सिक्ख समुदाय इसे 'बन्दी-छोड़' दिवस के रूप में मनाता है। अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर की स्थापना भी सन् 1577 में दीपावली के दिन ही हुई थी।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने दीपावली के दिन ही अपना भौतिक शरीर छोड़ा था।

सन् 1999 में पोप जॉन पौल द्वितीय ने भारतीय चर्च में अपने माथे पर तिलक लगाकर ईसा मसीह के अंतिम भोज का असाधारण प्रदर्शन किया था, तब से ईसाई समुदाय इसे पर्व के रूप में मनाता है। इसे यह समुदाय इसलिए भी मनाता है कि जब भारत में वे लोग बहुसंख्यक हिंदुओं के साथ रहते हैं, तब उनके बच्चे भी पटाखे छोड़ने को मचल उठते हैं, इसलिए बच्चों की खुशी के लिए दिए जलाते हैं। पटाखे छोड़ने, साफ-सफाई करने, सजने-संवरने में कोई बुराई नहीं मानते, पर मूर्ति पूजा को पाप समझते हैं।

प्राचीन काल में दीपावली विक्रम सम्वत् के कार्तिक महीने में खरीफ की फसल पकने के उपलक्ष्य में मनाई जाती थी। पद्म पुराण, स्कन्द पुराण आदि में इसका उल्लेख मिलता है।

मुस्लिम समुदाय भी दीपावली को 'जश्न-ए-चिराग' के रूप में मनाता है। विशेष रुप से मालवा क्षेत्र में यह समुदाय दिवाली मनाता है। देखा जाए तो मुस्लिम समुदाय के लोग पटाखों सहित दिवाली पर प्रयुक्त कई वस्तुओं का निर्माण करते हैं और दिवाली की खुशियों में शरीक होते हैं।

हमारे यहां दीपावली पर्व को भाईचारा एवं सद्भाव के साथ मनाने की

पुरानी परम्परा रही है। यह विशुद्ध रूप से ठेठ भारतीय त्यौहार है।

हां, दिवाली के पीछे की कथाएं तो कई हो सकती हैं और आगे भी नयी-नयी जुड़ती चली जाएंगी।

दीपावली की प्राचीनता का पता इसी से लगाया जा सकता है कि दीपक का अस्तित्व तो आग के आविष्कार के बाद ही किसी न किसी रूप में मिल सकता है, परन्तु पटाखों का प्रचलन तो पन्द्रहवीं सदी में चीनी फौज से शुरू हुआ था।

वस्तुतः अब ज्योति पर्व की दस्तक कई देशों तक होने लगी है। जहां-जहां प्रवासी भारतीय बस गए हैं, वहां दीपावली मनाई जाती है और इनकी खुशी में वहां के लोग भी शामिल होते रहते रहते हैं। अब इसे नेपाल, श्रीलंका, म्यांमार, मॉरीशस, फीजी, पाकिस्तान, बांग्लादेश, ऑस्ट्रेलिया यहां तक कि अमेरिका आदि देशों में भी मनाया जाता है। खेती-बाड़ी से शुरू हुआ यह त्यौहार आज बाजारवाद और सियासी दांव-पेचों तक पहुंच गया है। साथ ही राजनीतिक दिवाली की तैयारियां भी आरम्भ हो चुकी हैं। हां, दीयों में तेल तो आम नागरिक ही डालेंगे, पर दिवाली नेता लोग मनाएंगे।

खैर, आप सभी को पुनः प्रकाश-पर्व की बहुत बहुत बधाई।

चमकीला सूरज निकलेगा

चारु सक्सेना, पत्नी श्री प्रकाश सक्सेना, अधीक्षक (सीसीओ), केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर-जोन, जयपुर

अभी घिरा है तिमिर तो क्या...
फिर उज्वल उजाला भी होगा
गम की बदली छाई तो क्या
खुशियों का सूरज फिर निकलेगा
जब फूल शाख से टूटता है
तभी नव पलवित नव उदित
नव वृक्ष जन्म लेता है
दूर गगन का चांद भी तो
घट घट कर शून्य होता है
शून्य से वो भी तो
फिर से पूर्ण होता है
जीवन रूपी नदिया में
माना तूफां हैं बहुत अभी
हिचकोले खाती नैया तेरी
माना डगमग डोल रही है
पर ...
तू हिम्मत रख जरा
मिलजुल कर पतवार थाम जरा
फिर देख...
तू भी पार कर जायेगा
सुख के समंदर में फिर से
मदमस्त गोते तू लगाएगा
क्यों घबराता तू देख जरा...
तूफां थमते ही कैसे
अदना सा इक पक्षी
घरौंदा नया बनाता
छोटे-छोटे तिनकों से
एक आशियाना बड़ा बनाता
फिर तू तो समर्थवान इतना...
पर्वत से राह निकाल सके
बहती तीव्र धाराओं का
रुख भी तू तो मोड़ सके
तू वंशज उस दिव्य पुरुष का
जो कर्मों का लेखा-जोखा रखता
बस कर्म किए जा तू तो
सत्कर्मों के आगे
भाग्य कहाँ फिर सोता है
फिर कर्म से तू क्यों घबराता है
मत निराश हो...
वक्त ये भी बीतेगा
काली घटा छट जाएगी
चमकीला सूरज फिर निकलेगा
हां चमकीला सूरज फिर निकलेगा।

दिनांक 13 अप्रैल, 2023 को आयोजित मेडिकल कैम्प

दिनांक 10 मई, 2023 को आयोजित साईकिल रैली

दिनांक 9 जून, 2023 को आयोजित तनाव मुक्त जीवन संबंधी कार्यशाला

दिनांक 21 जून, 2023 को आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

जीएसटी दिवस समारोह–2023

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2023

दिनांक 9 नवम्बर, 2023 को आयोजित दीपावली मिलन समारोह

दिनांक 01 दिसम्बर, 2023 को आयोजित वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक

दिनांक 20 दिसम्बर, 2023 को आयोजित ध्यान योग शिविर

दिनांक 16 जनवरी, 2024 को आयोजित स्वच्छता शपथ

खेल-कूद

सितंबर, 2023 में उदयपुर में आयोजित अखिल भारतीय सिविल सेवा टेनिस प्रतियोगिता में रीजनल स्पोर्ट्स बोर्ड, जयपुर की टीम ने हरियाणा को 2.0 से हराकर कास्य पदक जीता

2022-23 में टर्की में आयोजित आई टी एफ मास्टर विश्व सीनियर प्रतियोगिता में भारत की ओर से टीम प्रतिस्पर्धा में श्री जगदीश तंवर, अधीक्षक सीजीएसटी संभाग, बीकानेर ने कप्तान के रूप में भाग लिया

।।आईसीटी मत लेना यारे।।

विशाल सोलंकी, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, उदयपुर

खुश तो बहुत हुए थे हम, राष्ट्रीय स्तर पर चुनकर
छोटे मासूम नयनों से, जीवन के सुन्दर सपने बुनकर
यादें आई जब घर की, फोन पर बातें सुन-सुनकर
बरसती थीं अक्सर ये आंखें, मोती गिरा टुनटुन कर
ढूंढने भी लगा था मैं, अपनी धरा की राह
दिल में जो बैठी थी मेरे, अपने अपनों की चाह,
कोई कहता कुछ दिन का है बिछोह, कोई देता, अपनी अलग सलाह।
अपनों ने समझाया बहुत था,
क्यों दिल पर लानत लेना प्यारे
पर तुम आईसीटी मत लेना यारे।।

इस बीच दिखी किरण आशा की, और दिखी मधुर माधुरी राह,
विभाग ने खोली थी मेरे आईसीटी की बांह, सोचा
मैं तो राष्ट्र स्तर का निरीक्षक हूँ,
विभाग का भविष्य वुड-बी अधीक्षक हूँ,
अपने देश के कर (टैक्स) का, सच्चा एक रक्षक हूँ,
पर वर्षपर्यंत कर इंतजार, फिर लगा जैसे कोई भिक्षुक हूँ।
आखिर चमक लौट के आई,
मनवांछित राज्य में पोस्टिंग पाई, अरमान पूरे हुए थे सारे,
पर कहीं से ये आवाज ना आई,
कि आईसीटी मत लेना यारे।।

खुश था कि ये विभाग है मेरा, इसकी प्रगति अरमान है मेरा,
माता-पिता को निहार कर, देश सेवा ही मान है मेरा,
दूर पोस्टिंग पाई फिर से, उतना धवल नहीं हुआ सवेरा,
फिर भी एक अरमान था मन में, गृह नगर को है, कश्ती खेना यारे
चाहे मेरे सपने थे हारे
वरना आईसीटी क्यों लेना यारे।।

वर्षों गृहनगर से दूर रह, जब घर लौट कर आया था,
पूरे करने थे काज सब अपने, ऐसे अरमां लाया था,
टूट गया था दर्द सहनकर, मां पर बीमारी का साया था,
सुंदर सपने बुनकर मैं जब, अपनी धरती पर आया था,
ईश्वर की अनुकंपा से, मां मेरी बच पाई थी,
पर किस्मत इतनी संवरी ना थी, बुरी सौगातें साथ में लाई थी,
पिता का उठ गया था साया, जो कभी ठीक से मिल बैठ ना पाए,
हूम हूम करते इस मन में, थे सिर्फ
काले धुएं के साए।
मृदु गंगाजल की आस में हमने, पाए
थे समंदर वो खारे,
हम आईसीटी क्यों आए यारे।।

राष्ट्रीय स्तर का सपना भी, अब टूटने
वाला था,
राज्यों में बंटे देश में, अपना भाग्य भी काला था,
डीपीसी के चक्रव्यूह से हमने, खुद को पार निकाला था,
विभाग की रिव्यू डीपीसी, स्वयं काल का साला था,
लेट किंतु पदोन्नति की ख्वाहिश से, मुश्किल में खुद को संभाला था,
बच नहीं पाए नाग-पाश से, जो वर्षों किसी ने पाला था,
विशाल अधीक्षक हुए कण-कण भर,
वज्रपात बना सर्पदंश वो, जिससे खुद को संभाला था,
गिरे सीनियरिटी की गर्त में, अब कौन बचाने वाला था,
अपने विभाग व अपने देश में, अपनों के हाथ में भाला था,
स्वदेश प्रेम की कीमत चुकाई, सूचियों से हमें ही टाला था,
अपने स्वर्ण अनुजों से गिराकर, कांसे में हमको ढाला था,
अब तो अपने आगे थे सारे, सपने सारे टूटे थे न्यारे,
हम अधिकारी सब, अब बने बेचारे
आईसीटी मत लेना यारे।।

भाग्य कर्म को नित्य समझकर,
रश्मियों को ही आदित्य समझकर,
मैन्युअल को साहित्य समझकर,
ईश्वर का सानिध्य समझकर,
इतना समझ पाए हम सारे,
आईसीटी मत लेना यारे।।
खुद को तड़ीपार समझना,
कभी होगा बेड़ा पार समझना,
अजनबियों को यार समझना,
पर ऐसा निर्णय मत लेना प्यारे,
तुम आईसीटी मत लेना यारे।।

तमस, रजस और सत्व तीनों गुण जीवन में अनिवार्य हैं.... ओशो रजनीश

स्नेह ठेनुआ, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, उदयपुर

हम बुरा कर्म नहीं करना चाहते और परमात्मा भी नहीं चाहेगा कि हम बुरा कर्म करें तो ये बुराई कहाँ से आती है। हमें कौन बलात धक्के देता है और बुरे कर्म करवा लेता है। अलग-अलग चिंतकों से अलग अलग उत्तर खोजे। जो बहुत गहरे नहीं गये तो बोले शैतान हैं वो करवा लेता हैं। उत्तर खोजना जरूरी था वो एक डेविल हैं पापात्मा हैं वो करवा लेता हैं। यह उत्तर बहुत गहरा नहीं हैं यदि यह उत्तर अर्जुन को दिया जाये तो उनका प्रश्न होगा कि वह परमात्मा उस पापात्मा पर कुछ नही कर पाता। तो क्या वह शैतान उस परमात्मा से भी ज्यादा शक्तिशाली हैं। और यदि वास्तव में वह पापात्मा ज्यादा शक्तिशाली हैं तो मुझे उस परमात्मा के चक्कर में क्यों उलझाते हों मैं इस शैतान को ही नमस्कार करूँ।

अनेक चिंतकों ने एक दूसरा तत्व खोजने की कोशिश की हैं। एक दूसरा भी हैं परमात्मा के अलावा जो लोगों को पाप में धक्के दे रहा हैं लेकिन यह उत्तर न तो मनोवेज्ञानिक हैं न बहुत गहरा हैं। इससे तो वो राजी हो सकते हैं। जो किसी भी चीज के लिए राजी हो सकते हैं। लेकिन कृष्ण ऐसा उत्तर नहीं देते। कृष्ण बहुत मनोवैज्ञानिक उत्तर देते। वो यह कहते है कि प्रकृति के त्रिगुणा हैं - रजस, तमस और सत्व उनका उत्तर बहुत वैज्ञानिक हैं। वो कहते हैं कि प्रकृति त्रिगुणा हैं। कृष्ण ने त्रिगुणा बात कही थी तब बड़े वैज्ञानिक आधार रखते थे। लेकिन कृष्ण के बाद पिछले 5000 साल में जितने लोगों ने कही की उनको विज्ञान का कोई बोध नहीं था। वो दोहराते गये। लेकिन पश्चिम में पिछली सदी में अध्ययन के बाद विज्ञान ने फिर कहा है कि प्रकृति तिगुना हैं।

जिस दिन में हम आधुनिक सदी में परमाणु का विश्लेषण कर सके, परमाणु को तोड़ सके उस दिन बड़ी चकित होकर हमें पता चला की परमाणु तीन हिस्सों में टूट जाता हैं। वह इलेक्ट्रान, न्यूट्रान और प्रोटोन में टूट जाता हैं। और वैज्ञानिक कहते हैं कि इन तीन के बिना परमाणु नहीं बन सकता हैं। और तीनों के जो गुणधर्म हैं वो ही गुणधर्म सत्व रज और तम के हैं। ये तीन जो काम करते हैं यह वो ही काम करते हैं जो हम बहुत पुराने समय से सत्व, रज और तम शब्दों से लाते थे। उसमे तमस हैं जो Inertia वो अवरोध का तत्त्व हैं स्थिरता का तत्व हैं अगर तमस ना हो तो जगत में कोई भी चीज स्थिर नहीं रह सकती। अगर आप एक पत्थर उठा कर फेंकते हैं। अगर जगत में तमस ना हो, कोई gravitation पॉवर ना हो, रोकने वाली ताकत, अवरोधक ना हो तो फिर पत्थर कभी भी गिरेगा नहीं अनंतकाल तक कोई नहीं रोकेगा। आप और हम जमींन पर नहीं रह सकते वो तमस पृथ्वी का gravitation पॉवर हमें उड़ने से रोकता है।

बड़े गजब की बात की तमस अवरोधक शक्ति ना हो तो गति भी असंभव हैं। गति भी इसलिए संभव हैं कि अवरोधक शक्ति से उपयोग कर सके। यदि आपकी कार में ब्रेक न हो तो कार की गति भी असंभव हैं। इसमें एक्सीलेटर ही काफी नही हैं। इसमें ब्रेक भी जरूरी हैं। जीवन में एकदम विस्फोट हो जाये यदि उसमें रोकने वाली ताकत नहीं हो। inertia तमस को रोकने वाली ताकत हैं। रजस वो गति मूवमेंट की ताकत हैं। ये उलटी ताकतें हैं। तमस रोकता रजस गति देता। ये शक्ति है एनर्जी है।

सत्व तीसरा कोण हैं जैसे हम एक Triangle त्रिभुज बनाए जिसमें दो कोण नीचे हो और एक कोण ऊपर हो सत्व इन दोनों के ऊपर हैं। कहे की इन दोनों का balance है संतुलन हैं। सत्व बैलेंसिंग हैं। अगर गति भी हो रोकने वाला भी हो लेकिन संतुलन ना हो। जैसे एक कार हैं जिसमे एक्सीलेटर भी हैं, ब्रेक भी हैं लेकिन उसके ड्राईवर ना हो तो वो ड्राईवर हैं वह पूरे वक्त बैलेंसिंग करता हैं, जब जरूरत

होती हैं ब्रेक पर पैर लाता हैं। जरूरत हो तो एक्सीलेटर पर पैर लाता हैं। वो पूरे वक्त बैलेंसिंग करता हैं।

ये तीन तत्त्व हैं। जिन्हें भारत ने यह नाम दिए थे। पश्चिम में इन्हें इलेक्ट्रान प्रोटोन और न्यूट्रान नाम दिए हैं। कोई और नाम दिया जाये कोई फर्क नहीं पड़ता। एक बात अनिवार्य रूप से सिद्ध हो गयी हैं कि जीवन का अंतिम विश्लेषण तीन शक्तियों पर टूटता हैं। इस तीन शक्तियों को कई नाम दिए गये थे जो लोग वैज्ञानिक ढंग से सोचते हैं। उन्होंने रजस, तमस, और सत्व को संज्ञा दी। जो लोग मेटाफेरिकल या काव्यात्मक ढंग से सोचते थे उन्होंने कहा ब्रम्हा, विष्णु, महेश। उनका भी काम वही हैं। वो तीन नाम भी वही काम करते हैं। उसमे ब्रह्मा सृजन शक्ति हैं। विष्णु sustaining सँभालने वाले और महेश विनाश करने वाले, उन तीन के बिना सृष्टि का निर्माण नहीं हो सकता। ये इलेक्ट्रान, न्यूट्रोन, प्रोटोन ये भी यही काम करते हैं। इसमें न्यूट्रान नेगेटिव हैं। शिव जैसा हैं.. negate करता हैं तोड़ता नष्ट करता हैं। उसमें जो पॉज़िट्रान/प्रोटोन हैं वह ब्रम्हा जेसा हैं पॉजिटिव हैं। वह विधायक हैं, निर्माण करता हैं, इसलिए पॉज़िट्रान उसका नाम हैं। इसमें जो इलेक्ट्रान हैं वह ना तो नेगेटिव है और ना ही पॉजिटिव है वो sustaining हैं। वो बीच में है बैलेंसिंग करता हैं, विष्णु जैसा।

कृष्ण कहते हैं कि मनुष्य के भीतर जो भी घटित होता हैं.. बाहर और भीतर वो इन तीनों शक्तियों का खेल हैं। इन तीनों शक्तियों के अनुसार सब घटित होता हैं। आदमी घटाया जाता हैं, रोका जाता, जन्माया जाता, मृत्यु को प्राप्त करता, हंसी को उपलब्ध होता, रोने को होता है वो सारा इन तीन शक्तियों का खेल है। ये तीन शक्तियां अपना काम करती है। ये परमात्मा के तीन रूप जीवन को सृजन देते रहते हैं। अर्जुन पूछता हैं जब हम नहीं भी करना चाहते तो फिर कौन करवा लेता हैं। आप तो चाहते हैं कि आप जमीन पर ना गिरे लेकिन जरा पैर फिसला गिर जाते हैं। कोई शैतान गिरा देता हैं। पृथ्वी का gravitation पॉवर अपना काम करता हैं, उलटे-सीधे चलेंगे तो गिरोगे। माना आप नहीं गिरना चाहते पैर पर प्लास्टर लगेगा। आप डॉक्टर को कहोगे कि मैं नहीं गिरना चाहता और परमात्मा अकारण मुझ भले आदमी कि टांग नहीं तोड़ेगा। डॉक्टर वो ही जबाब देगा जो कृष्ण देते है पृथ्वी कि gravitation पॉवर गुरुत्वाकर्षण कि वजह से संभल के चले। क्यूंकि प्रत्येक शक्ति यदि हम उसके अनुकूल ना चले तो वह हमें नुकसान पहुंचा सकती है, अनुकूल चलेंगे तो नुकसान नहीं पहुंचेगी। प्रत्येक शक्ति का उपयोग अनुकूल प्रतिकूल हो सकता है। मनुष्य के भीतर शक्तियां ही उससे अनुकूल और प्रतिकूल कर्म करवाती है। मनुष्य चाहता है कि वो क्रोध ना करे और उसे क्रोध आता है और अपराध हो जाता है, परमात्मा करवाता है, नहीं परमात्मा क्यूँ ऐसा करेगा परमात्मा का क्या प्रयोजन, फिर हम उसे परमात्मा क्यूँ कहेंगे।

कृष्ण कहते हैं कि जीवन की शक्तियां काम करती है, मनुष्य के भीतर क्रोध है वो भी अनिवार्य तत्व है वह हमारे भीतर नेगेटिव फ़ोर्स है क्रोध विनाश की शक्ति है। प्रेम हमारे भीतर निर्माण की शक्ति है और विवेक हमारे भीतर बैलेंसिंग फ़ोर्स। जो आदमी विवेक को छोड़ कर सारी शक्ति क्रोध की तरफ लगा देगा वह बलात नरक की तरफ चलेगा जो सारी शक्ति प्रेम की तरफ लगा देगा वह बलात स्वर्ग की तरफ जायेगा। जो आदमी बैलेंसिंग कर लेगा और समझ लेगा सुख और दुःख वह आदमी मुक्ति-मोक्ष की तरफ जायेगा।

इसलिए हमारी प्रत्येक वृति की सीमायें है जंहा से हम उसे रोक सकते है। एक विचार मन में उठा शब्द बना भीतर अभी नहीं कहा तो रोक सकता था फिर वो शब्द या वाकया मुंह से निकल गया अब उसे वापस नहीं लिया जा सकता। एक सीमा थी शब्द/वाक्य बना जबान तक आ गया वहां तक रोका जा सकता था शब्द/वाक्य बोलने के बाद वापिस नहीं ले सकते।

क्रोध और काम एक जगह है जंहा से वापिस लौट सकता है जब इस जगह से निकल गया तो वापिस नहीं लौट सकता है। ध्यान रहे बड़े मजे की बात है कि काम और क्रोध उस सीमा तक जब तक आपके भीतर है जंहा से वापिस लौट सकता है उस समय तक आप उसे सहयोग देते है और जब वो वापिस नहीं लौटता तो आप आश्चर्य करते है कि कौन बलात मुझसे यह कार्य करवा रहा है। आप इसे ठीक से समझे तो समझ आ जायेगा एक सीमा होती है जहां तक हर वृति आपके हाथ में होती है लेकिन आप उसे इतना उकसाते है कि आपका पूरा शरीर पूरा यन्त्र उसे पकड़ लेता है और वह आपकी बुद्धि और विवेक से बहार हो जाता है और

घटना घट जाती है। आप कहते हैं कौन बलात मुझसे यह गलत कार्य करवा रहा है। मनुष्य के भीतर की शक्तियां यह काम करवाती है जिसके गहरे में आपका बहुत बड़ा सहयोग है।

कृष्ण कहते है कि कोई बैठा नहीं है जो आपको क्रोध में, काम में, युद्ध में और लड़ाई झगड़े में ले जाने को धकेले। प्रकति के नियम है यदि आप नियमों को समझ लेते है तो आप समता संतुलन को उपलब्ध होते, अनाशक्ति, साक्षी भाव को उपलब्ध होते है , विवेक को, श्रद्धा को उपलब्ध होते है तो तुम्हें कोई चिंता करने कि जरुरत नहीं है जो भी होगा वह परमात्मा पर छोड़ दें। लेकिन जब तक तुम ऐसी समता अनाशक्ति को उपलब्ध नहीं होते भीतर आसक्ति पालते चले जाते हो। बारूद में चिंगारी डालते चले जाते हो जब आग लग जाती है तो आप कहते हो में ऐसा नहीं चाहता था।

आपने क्रोध का बीज दिमाग में बोया तो सारी दुनिया से क्रोध को बल देने वाली तमस की शक्तियां आपकी तरफ बढ़ने लगेगी, आपने प्रेम का बीज बोया तो सारी शुभ शक्तियां आपकी तरफ बढ़ने लगेंगी। आपने साक्षी भाव निर्मित किया दुनिया कि सारी ताकतें बैलेंसिंग हो जाएँगी सब चीजें सम हो जाएँगी। ऐसी सुख और दुःख में सम भाव रहेगा .... कृष्ण अंत में कहते है अच्छे और बुरे कार्य ना कोई शैतान करवा रहा है और ना ही कोई भगवान, मनुष्य अपने भीतर जिसका बीज बोयेगा वो ही शक्ति सक्रिय होकर काम करने लगेगी। मनुष्य का स्वभाव कि वह गलत चीजों को जल्दी पकड़ लेता है और वह हमारे शरीर में नकारात्मक रसायनों का निर्माण करने लगते है और स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। धीरे-धीरे अभ्यास से उपरोक्त लिखित बातों को अपने जीवन में उतार सकते है। अंत में... भौतिक वस्तुओं से आप सुख की प्राप्ति कर सकते हो लेकिन आनंद की प्राप्ति के लिए अध्यात्म को अपनाना पड़ेगा।

हिंदी हूँ मैं

सुनीता जावा, एमटीएस, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जोधपुर

हिंदी हूँ मैं, हिंदी हूँ, संस्कृत से निकली हूँ
और अनेक भाषा धर्मों की सखी संगिनी हूँ
पर अपने ही देश में अनजान अजनबी-सी पहेली हूँ
हिंदी हूँ मैं, हिंदी हूँ
पर अब विदेशी भाषा का जो चलन हो गया है
यहाँ राम-राम और जय श्री कृष्णा कहते नहीं है
लोग यहाँ हैलो हाय कहते हैं और
यहाँ गुड बाय का प्रचलन हो गया है
यहाँ अब मैं जन्म दिवस के रूप में आती हूँ
और हिंदी पखवाड़े के नाम से पहचानी जाती हूँ यहाँ
हिंदी हूँ मैं, हिंदी हूँ
इस भारत वर्ष की अपनी हूँ।

मातृ दिवस

नीता शुक्ल, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर

वैसे तो प्रत्येक दिन सभी माताओं को समर्पित होते हैं, परंतु आज की पीढ़ी और समय के हिसाब से प्रत्येक वर्ष मई माह का दूसरा रविवार मातृ दिवस के रूप में मनाया जाता है।

माँ का विवरण शायद किसी शब्द सीमा में नहीं समा सकता। एक माँ ही है जो हम सबकी प्राथमिक पाठशाला से लेकर जीवन की हर दार्शनिक, मार्मिक और पथप्रदर्शक बनती है, यूं मानो की माँ के बिना ये जीवन एक तख्ती तो बनता है परंतु उस तख्ती में स्याह वर्ण की चमक आदरणीय माँ के द्वारा ही आ पाती है। अपने आंचल की प्रत्येक छांव को उस तख्ती रूपी संतान पर यूं ही सर्वस्व न्यौछावर कर देती है। माँ के समर्पण को शब्दों में दर्शाना अत्यधिक कठिन है। माँ का आंचल हर उस स्वर्ग और स्वर्ण से बढ़कर है जिसकी हमने कभी कल्पना भी नहीं की होगी, जीवन के सभी सुखों का समंदर असलियत में माँ के आंचल में ही तो है, केवल महसूस करने की आवश्यकता है।

अभावों में भी अपनी संतान को हर संभव सुख को प्रदान करती है तथा कदापि प्रतीत भी नहीं होने देती कि कोई कमी भी थी।

माँ के आशीर्वाद की अगर मैं बात करूं तो उस से बड़ा कोई ब्रह्मास्त्र नहीं हो सकता, आप सोचिए की असंख्य भावनाओं को जोड़ कर जब एक माँ आशीर्वाद देती है तो वह संतान के मार्ग की प्रत्येक कठिनाई को अवशोषित कर अपने में समाहित कर लेती है, इसीलिए महाभारत में यक्ष द्वारा पांडवों से पूछा गया प्रश्न कि पृथ्वी से भी बड़ा क्या है– ‘‘माँ’’, यह उत्तर जब ज्येष्ठ पाण्डु पुत्र युधिष्ठिर ने यक्ष को दिया तो वह भी भावभीन हो गया, अर्थात माँ पृथ्वी से भी बढ़कर है।

आज के युग में कुछ भी शुद्ध नहीं है परंतु माँ का प्रेम और आशीर्वाद सतयुग से आज तक पवित्र है, और युगों–युगों तक ऐसे ही पवित्र रहेगा, जो व्यक्ति अपनी माता का हृदय से सम्मान तथा आदर करता है मै समझती हूं कि उसको किसी मंदिर जा कर कोई भी आराधना करने की आवश्यकता नहीं होगी।

माँ के निश्चल प्रेम की पराकाष्ठा तो देखिए वो अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के बाद भी अपनी संतान से अपने लिए किसी भी प्रकार के लाभ की अपेक्षा नहीं करती, हमेशा यही चाहती है कि मेरी संतान जहां भी रहे जैसे भी रहे सुखी और सुरक्षित रहे।

जब कोई अच्छा कार्य करता है तो हमेशा यही पूछा जाता है की किस माँ का लाल है और जब कोई अशोभनीय कार्य करता है तो किस बाप की संतान है कितनी भिन्नता है समाज में भी ना, भावार्थ यह है कि कार्य की सूत्रता बखान करती है कि अच्छा कार्य किया गया है तो अवश्य ही यह गुण माँ ने प्रदान किया होगा।

आज के समय में जिंदगी बहुत ही तीव्र वेग से जा रही है और इस में कहीं हम अपनी जननी को न भूल जाएं कदाचित इसीलिए यह मातृ दिवस प्रचलन में आया होगा।

मैं सभी माताओं को नमन करते हुए आप सभी से विनम्र निवेदन करती हूं कि अपनी माताओं का सम्मान और आदर करें और प्रत्येक दिवस को मातृ दिवस के रूप में हर्षोल्लास से मनाएं।

क्षणिकाएं

ऋतु अग्रवाल, अधीक्षक, अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट, सीमा शुल्क आयुक्तलय, जयपुर

अरमान नहीं मुझे रेशमी कपड़ों में लपेटा जाए
हां दो गज कफन का टुकड़ा
मुझे इज्जत से बक्शा जाए

सुनो!
कभी इत्तेफ़ाकन रू-ब-रू आ जाओ
तो यकीं मत कर लेना
कि मैं वही हूं
वह शख्स़ तो कब का मर चुका।

हमको क़ामिल होने से
रोकेगा भला कौन
यह अज़ा रज़ा क़ज़ा
सब बहाने हैं बुज़दिली के

यह जो किनारे पर आकर
टूट जाती हूं बिखर जाती हूं
बेवजह नहीं है
तेरे कठोर (मज़बूत) होने का
भरम बना रहे दुनिया में
बस इतना चाहती हूं।

ज़िंदगी में ए दोस्त यूं भी हो गया
फलसफा जिन से था जिंदगी का
फासला उनसे ही हो गया

तुम जिनका गुरूर करते हो,
उन्हें हम कागज़ के रुक्के समझते हैं।

नमी सी रहती है आजकल आंखों में
तुम्हारी
क्या पढ़ने लगे हो तुम शायरी हमारी

हार जीत की तो बात ही नहीं थी
मोहब्बत थी ज़नाब कोई जंग नहीं थी।

सुबह उठती हूं
तो मन का बोझ
ज़रा कम होता है
अलबत्ता मेरा तकिया
हर रोज़ ज़रा नम होता है।
मैं उनमें नहीं जो भूल जाऊं
शब के सहर होने पर
मैं हूं वो जो साथ निभाए
तेरी जुल्फ़ के सर होने तक।

आज अपने ही ज़ख्म़ कुरेदे हमने
खूं (खून) जो निकला तो तसल्ली हुई
अभी ज़िंदा हैं हम

कुछ अल्फ़ाज़ तेरी जुल्फ़ में अटके हैं
तू जुल्फ़ ज़रा झटके तो रिहा हो जाएं
कि एक शेर मुक़म्मल हो जाए

जिंदगी में सभी साथ निभाने नहीं आते
कुछ लोग सबक सिखाने भी आते हैं।

मुरझा जाऊंगा मैं
सूख जाऊंगा मैं
फिर भी पास रखना मुझे
किसी किताब में छिपा कर
फूल हूं गुलाब का
खुशबू फैलाऊंगा मैं

चल आज यह रस्म भी अदा कर दे,
थोड़ी सी मिट्टी डाल मोहब्बत दफ़न कर दे।

वह बोले ज़िंदगी ख़ुदा की नेमत है
इसे खुल कर जिओ
इस तरह खुले हम
कि पुर्ज़ा पुर्ज़ा हो गए

कल तकिया भी रोया साथ मेरे
बोला काश होते दो हाथ मेरे
जिनसे पोंछ पाता मैं आंसू तेरे

कौन पीता है गले के तर होने तक
हम तो पीते हैं शब के सहर होने तक

शिकायतें अपनी जगह हैं इश्क अपनी जगह
शिकायतों से इश्क कम नहीं होता

आज आईने के शख्स ने कहा बहुत देखे तेरे जैसे
हमने कहा पर हमें नहीं मिला कोई तेरे जैसा

यह रोज़-रोज़ की किच किच पसंद नहीं है मुझे
तुम एक बार खुलकर लड़ क्यों नहीं लेते

काश मैं तेरी बेकरारी,
तू मेरा सुकून हो जाए।
मैं तेरी आगोश में रहूं,
और ये सांसे रिहा हो जाएं।

ना मुक़दमा ना अदालत
ना पैरवी ना फ़रमान
लो मान लिया मुज़रिम
सज़ा सिर्फ तुम देना
बस इतना सा है अरमान

ख़त तो जला दिए हमने
पर कहानी तो लिखी रह गई

हर वक्त हर तरफ से
मुझे घेरे रहते हो।
तुम हवा हो क्या?

ऐसी क्या हुई ख़ता
हो गए तुम यूं ख़फ़ा
चाहे कर लो तुम ज़फ़ा
हम ना छोड़ेंगे वफ़ा
मर गए तो भी सनम
तुझ पर मरेंगे हर दफ़ा

वो पूछते हैं मुझसे
मेरे लम्बे बालों का सबब
ये तुम्हें उलझाने की
आखिरी कोशिश है सनम

इतना तो हम जिए भी नहीं
जितना मरते हैं तुम पर

उदासियां भी हर शख़्स के नसीब में नहीं होती
कुछ ख़ास होते हैं ये क़िरदार
जिनके हिस्से में आसमां और ज़मीं नहीं होती

जब बदली मेरी यादों की
तन्हाइयों से टकराती है
बारिशें घनघोर हुआ करती हैं

वे लाए थे इत्र देने को तोहफा मुझे
जानते ही नहीं
हम उनके ज़िक्र से महकते हैं

सुनो
तुम फिक्र मत करना
एक हादसा हूं मैं
जो टल जाएगा

रेत पर लिखी
इबारत हूं मैं
जो मिट जाएगी
सुनो
तुम अपनी हिचकियों का इलाज़ करा लो
अब हम तुम्हें याद नहीं करते

काश
तुम काश न होते
छूकर देखती तुमको
अगर
आकाश न होते।

यह जो तेरी फिक्र करती हूं
इसे मोहब्बत ना समझ लेना
मुझे तेरे कंधे मजबूत चाहिए
मेरा जनाजा उठाने के लिए

उस्ताद तुम बेहतर साबित हुए
तुमने मोहब्बत मुक़म्मल सिखा दी
हम तुमको वफ़ा पर सिखा ना सके

कोई कुछ मांगे तो दे देती हूं अक्सर
नहीं चाहती कोई लौटे खाली हाथ
मेरी तरह अक्सर

नसीब लिखने वाला
तो कब का लिख चुका
मैं तो बस इसमें अपना
किरदार अदा कर रही हूं

लोगों ने कहा
इस उम्र में भी इश्क करते हो?
हमने कहा चलो नहीं करते
तुम कोई बेहतर काम बता दो।

रिटायरमेंट

मनोज कुमार मनवानी, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर

घुमक्कड़, मनमौजी, खुशमिजाज बद्री जी के रिटायरमेंट पर साथियों और अधिकारियों ने उनकी तारीफों के पुल बांधे, अफसोस मिश्रित खुशी जताते हुए घोषित किया कि इनके रिटायरमेंट से, कल से ऑफिस न आने से मेहनती, सिंसियर वर्कर की कमी आफिस को खलेगी उनके स्वस्थ, आंनदमय भविष्य हेतु शुभकामनाएं दीं।

अल्पाहार से पहले संयोजक प्रोग्राम सम्पन्न होने की घोषणा करने वाले थे, तभी परिवार संग विशिष्ट अतिथियों में विराजमान बद्री जी की धर्मपत्नी उठी, खड़ी होकर अपने घूंघट के अंदर से ही बोली मुझे भी इनके रिटायरमेंट पर कुछ कहना है, संयोजक ने सादर आमंत्रित कर परिचय कराया ये बद्री जी की हमसफर हैं जिनके साथ उन्होंने अपना जीवन प्रेम और हर्षोल्लास से व्यतीत किया।

मिसेज बद्री घूंघट की आड़ में गांव की साधारण सी महिला थी, माइक पर आकर बिना लागलपेट यूं दिल के उद्गार व्यक्त किये 'बहुत खुशी है मुझे, आज ये रिटायर हो गए। नौकरी और शादी के तीसियों साल गुजर गए, जब कभी इनसे कहा कि मुझे घुमाने ले चलो, हमेशा कहते रहे ऑफिस में बहुत काम है, ऑफिस में बहुत काम है, मगर स्वयं किसी न किसी बहाने टूर पर घूम आते, लेकिन हमे कभी न कहीं ले गए, आज मुझे इनके रिटायरमेंट पर खुशी है बहुत खुशी कि भले ही मुझे कहीं न ले गए लेकिन अब मुझसे ये यह नहीं कह पाएंगे कि ऑफिस में बहुत काम है, ऑफिस में बहुत काम है।'

मिसेज बद्री जी की व्यथा से अनजान, पूरा हाल श्रोताओं के ठहाकों से गूंज उठा, उधर बद्री जी के चेहरे पर मिश्रित भाव थे वे खीसे निपोरते रहे साथियों और अधिकारियों की प्रशंसाएं कितनी रस्मी थी, श्रीमती जी के उद्गार कटु सत्य

थे वे तो रिटायर हो गए, श्रीमती तो कभी रिटायर न होंगी, जीवनपर्यंत उनके घरेलू कार्यों, घूंघट में ढकी छटपटाहट का कभी संज्ञान न लिया उन्होंने, वे असमंजस में थे कि कल से पत्नी के चेहरे पर बीते समय को लौटाने के उलाहनों की व्यथा का सामना किस प्रकार कर पाएंगे, अकेले सैरसपाटा करने जाते समय पत्नी का सामना किस प्रकार कर पाएंगे या क्या कल से अपनी जीवनसंगिनी को पूरा समय देकर उनके दर्द पर मरहम लगा पाएंगे?

उधर मिसेज बद्री रिटायरमेंट स्पीच, जिसे उन्होंने कभी तैयार न किया था, समाप्त कर निर्विकार भाव से घूंघट की आड़ में अल्पाहार का आनंद लेने में व्यस्त हो गईं।

> जिस व्यक्ति ने कभी गलती नहीं की,
> उसने कभी नया करने की
> कोशिश नहीं की।

स्वावलंबन

शालिनी वर्मा, अधीक्षक,
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय,
जयपुर

सुबह और शाम दिख जाती हैं,
बस या ऑटो रिक्शा का इंतज़ार करती हुई।
काँधे पर बैग या पर्स लटकाए
महिलाएं, ड्यूटी पर जाती या लौटती हुई।
अलसुबह उठी होंगीं और घर आँगन को संभाल,
रसोई का काम निपटाया होगा जल्दी-जल्दी।
बच्चों, पति का टिफिन बना अपनी भी
दो रोटियां डाली होंगी डिब्बे में जैसे-तैसे।
भागते-भागते पहुंची होंगी बस/ऑटो स्टैंड।
इनके लिए घड़ी हो जाती है निर्मम
बहुत तेज़ चलती है सवेरे-सवेरे।
कभी प्रश्न करे कोई जो इनसे कि
क्यों करती हैं यह भागदौड ?
जवाब कुछ भी हो इनका
मजबूरी, आर्थिक सहूलियत या ज्ञान का उपयोग,
पर सच है कि मानसिक और आर्थिक स्वावलंबन
की ताकत देती है हौंसला रोज-रोज
इन महिलाओं को घर और बाहर की
तमाम कठिन परिस्थितियों से जूझते हुए,
जीवन से तारतम्य बिठाने का।
जैसे चलती है एक नटनी संतुलन साध
झूलते हुए रस्से पर, कदम-कदम जमाते।
सलाम है इनके इस जुझारु, संघर्षशील जज्बे को
जो तदबीर के हुनर से लिखता है
स्वाबलंबी जीवन की नयी कहानी।

इंसान कहीं खो गया है

सुनीता जावा, एमटीएस,
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय,
जोधपुर

पद-पैसा और प्रगति की चाह में मानव ने जीना छोड़ दिया है
और प्रतिस्पर्धा के इस दौर में दौड़ना सीख लिया है
प्रगति के इस दौर में मानव आनंद-विहीन सा हो गया है
उम्र होती थी सौ तब आज मानव पचास का रह गया है
क्या विकास का दौर इतना छोटा हो गया है,

मशीनों के साथ-साथ रह रह कर स्वयं भी मशीन सा हो गया है
संयुक्त परिवारों को छोड़कर एकल परिवार का हो गया है
आज का मानव कितना तन्हां-तन्हां सा हो गया है
भूल गया है वह भारतीय सभ्यता और संस्कृति को
नैतिक मूल्यों का भी पतन हो गया है
आज का मानव दानव से भी आगे हो गया है।

बाहरी दिखावे की चाह ने मासूमों को भी नहीं छोड़ा है
खेलने की उम्र में स्कूलों में छोड़ा है
मानव का जीवन अजब खेला हो गया है
आधुनिकता के इस दौर में आज इंसान कहीं खो गया है
आज इंसान कहीं खो गया है।

म्हारो मनडो करैं पुकार गुराजी संग ले चालो जी

इंद्रा देवी धारू, कर सहायक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर संभाग-जे, अजमेर

आओ सुभद्रा का बीर,बरस गया म्हारा नेणा सू नीर,
मिट गयी रजनी, सुख भयी सजनी आप बिचारो जी
म्हारो मनड़ो करैं पुकार गुराजी संग ले चालो जी
केरी पाक आम रस बण गयो खुल गयो तालो जी
दो नेंणा मं मोती बस गयो फेर प्रभु आयो जी, तब हुयों उजालो जी,
कान्हौ घर घर मन हरसाव हुयो मतवालों जी,
म्हारो मनड़ो करैं पुकार, गुराजी संग ले चालो जी
मीरा न थे विष अमृत कर पायो,
द्रोपदी को थे भरी सभा में चीर बढ़ायो,
बारह-बारह दो जुग बीत्या, चोबीसा पारो जी।
कर-कर विनती हारी या इंद्रा मतवारी जी
म्हारो मनड़ो करैं पुकार गुराजी संग ले चालो जी
आंगली पकड़ो, भुजा पसारो हिवड़ा लगाओ जी.
कष्ट मिटाओ दुःख भगाओ आन बिराजो जी,
रास रचाओं गोपिया संग राधा रुक्मण संग रंग बरसाओ जी,
म्हारो मनड़ो करैं पुकार गुराजी संग ले चालो जी
मिनख जन्म से पार लगाओ जी जन्म-जन्म का बंधन सु आप छुड़ाओ जी
पाप कपट लोभी मन से आन बचाओ जी,
बृन्दावन में जाय पुकारू, मथुरा गोकुल नाथद्वारा जाय विराजो जी,
अब तो सुन लो नटवर विनती, राधा रुक्मण संग आन पधारो जी,
म्हारो मनड़ो करैं पुकार गुराजी संग ले चालो जी ---
मैं तो थाका चरण पखारू जी,
निधिवन में थे राधा जी संग रास रसाओं जी, वादों निभाओ जी,
लड्डू गोपाल आन पधारया, कार्तिक गणेश क साग जी,
थारी 'ओइसी', करै हाथ जोड़ विनती, बात विचारो जी,
म्हारो मनड़ो करैं पुकार गुराजी संग ले चालो जी

चित्रकारी

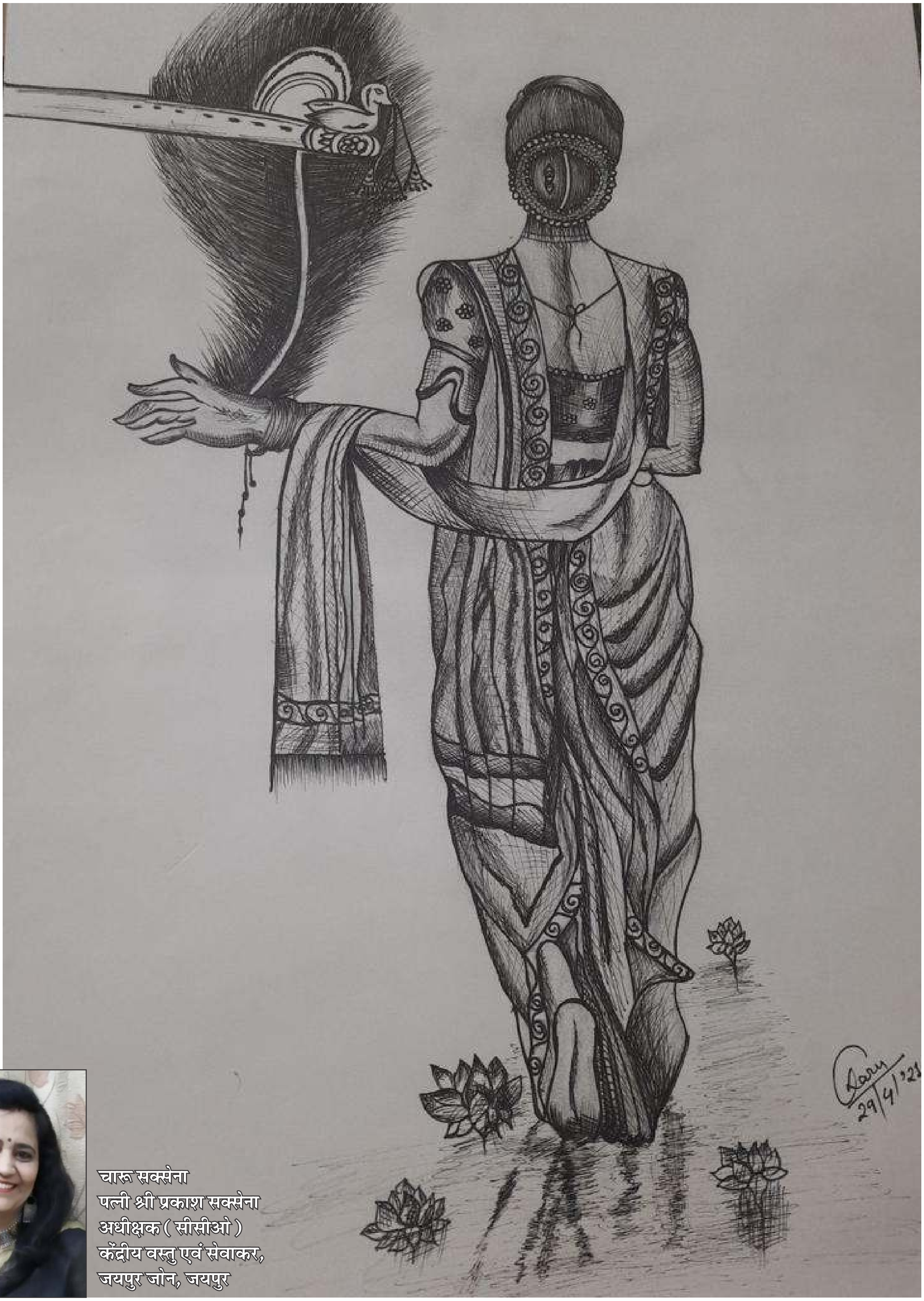

चारू सक्सेना
पत्नी श्री प्रकाश सक्सेना
अधीक्षक (सीसीओ)
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर,
जयपुर जोन, जयपुर

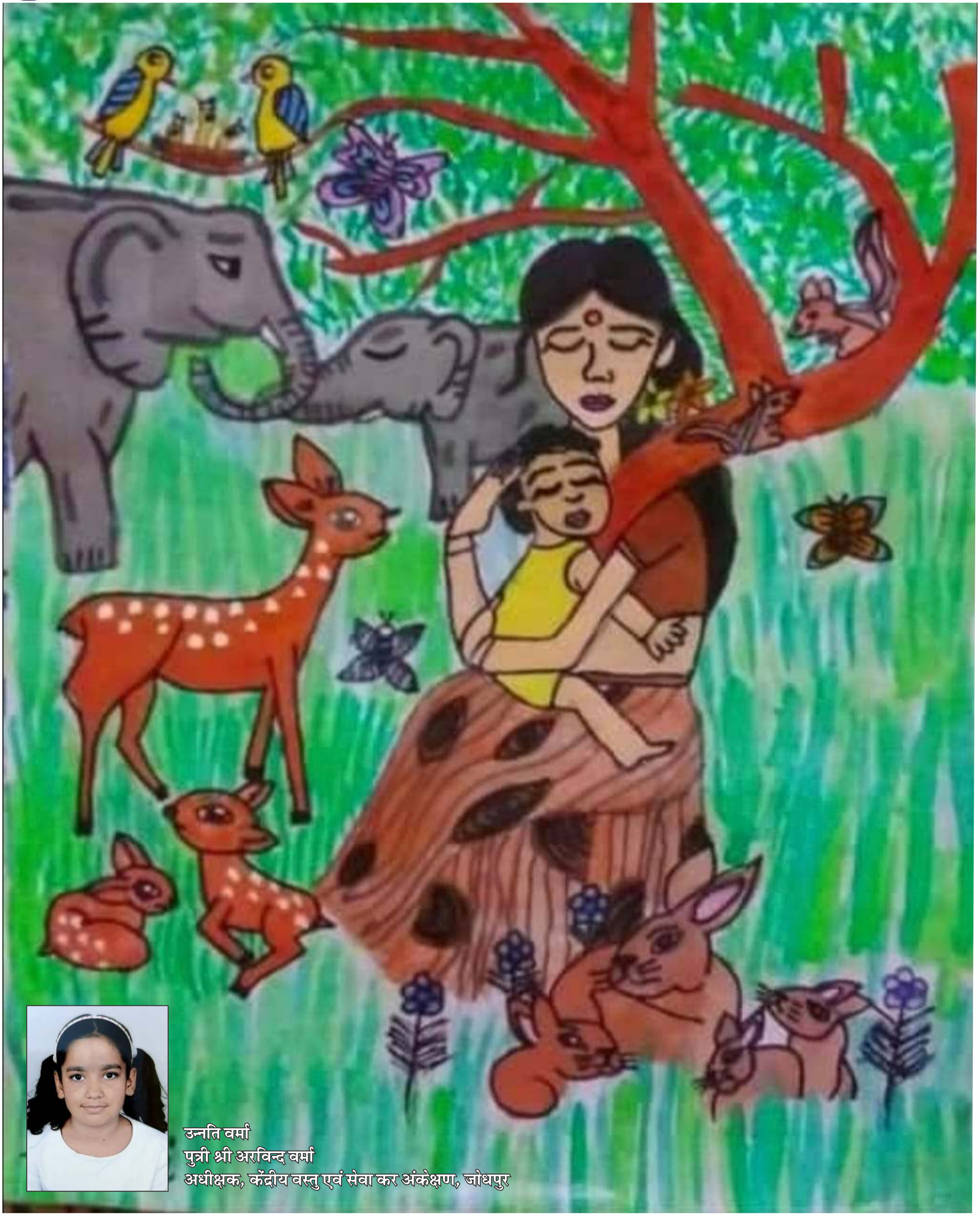

उन्नति वर्मा
पुत्री श्री अरविन्द वर्मा
अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण, जोधपुर

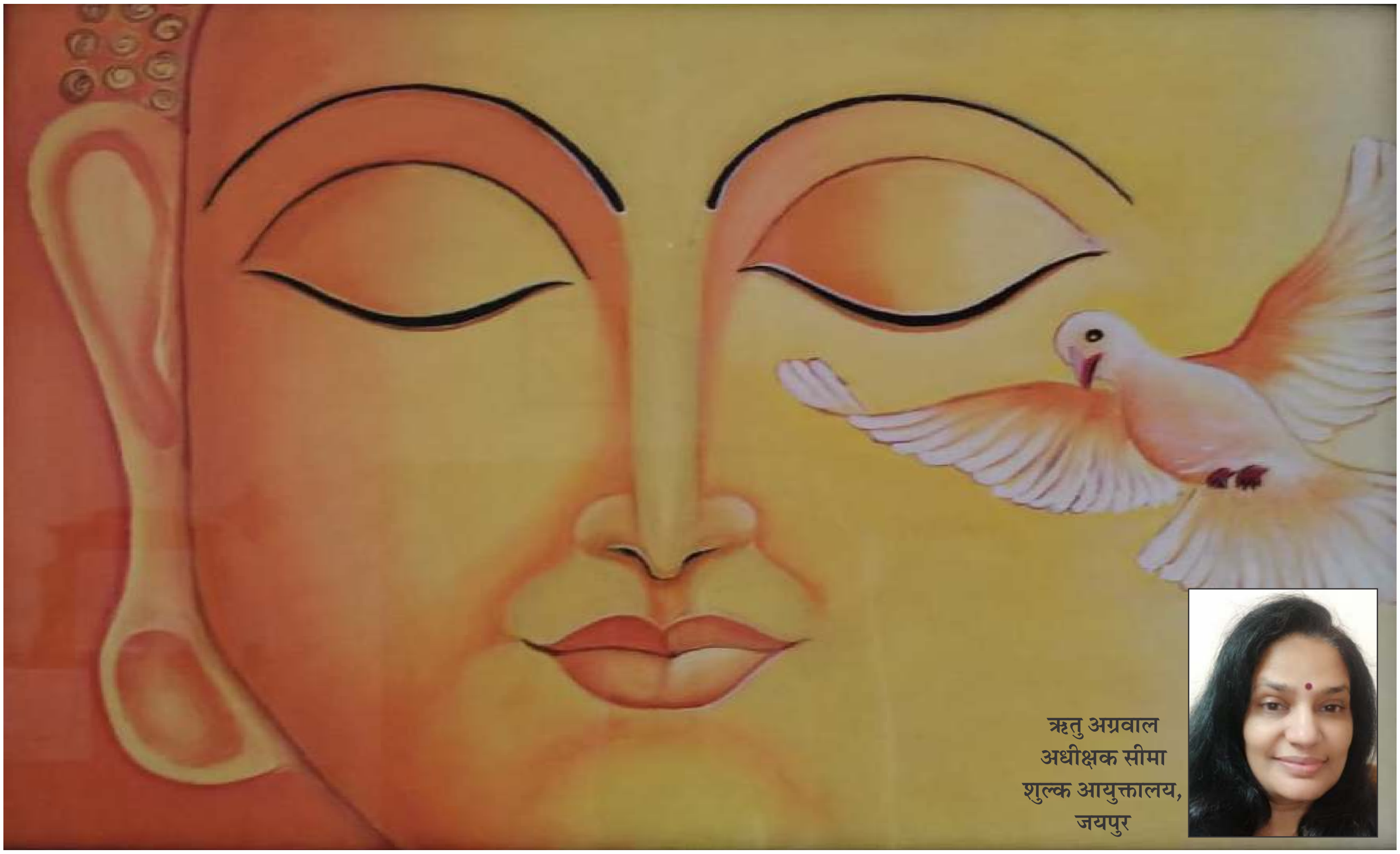

ऋतु अग्रवाल
अधीक्षक सीमा
शुल्क आयुक्तालय,
जयपुर

सिद्धि शुक्ला
भतीजी
सुश्री नीता शुक्ला
वरिष्ठ अनुवाद
अधिकारी

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा दिनांक 03.10.2023 को कार्यालय आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) जोधपुर, मुख्यालय – जयपुर का निरीक्षण दौरा

केंद्रीय वस्तु व सेवा कर एवं सीमा शुल्क, जयपुर

नव केंद्रीय राजस्व भवन, स्टेच्यू सर्किल, जयपुर